मेरी जीवन यात्रा

ओमप्रकाश गुप्ता

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मेरी जीवन यात्रा

मेरी जीवन यात्रा

ओमप्रकाश गुप्ता

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-254-8
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल -antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट -www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण -2020, ओम प्रकाश गुप्ता
मूल्य- 250.00 रूपये
मुद्रक - शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY OM PRAKESH GUPTA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

1.	आमुख	5
2.	मेरी जीवन यात्रा	7
3.	अपनी बात	8
4.	प्राक्कथन	10
5.	स्नेहमयी मॉ की गोद से	15
6.	जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी	17
7.	किशोरावस्था में संघर्ष	23
8.	कठिन दिनों में छोटे छोटे प्रयास	31
9.	भविष्य के जीवन की दहलीज	34
10.	आहत पर प्रशामक हवा की राहत	40
11.	गृहस्थ जीवन	46
12.	वर्तमान के विद्यालय में शिक्षक की भूमिका में	52
13.	सामाजिक क्रिया कलाप	57
14.	पूज्य पिता जी का देहावसान	60
15.	परमपूज्य ममतामयी माताजी का देहावसान	63
16.	मेरे जीवन रूपी सीप के स्वप्नों का मुँह खुलना	64
17.	आदर्श शिक्षक एवं अभिभावक के रूप में प्रतिस्थापन	69

18.	पारिवारिक सीप में मौक्तिक स्वरूप का रूपांतरण	72
19.	साकार होता सुनहरा सपना	75
20.	क्षणिक जीवन के अनुभव के कुछ शब्द	76
21.	जीवन: एक सरिता	78
22.	जीवन जीना - एक कला	80
23.	दिवा स्वपन	82
24.	सपने वो, जो चैन की नींद सोने न दे	84
25.	एक अहसास - एक पिता होने का	86
26.	पत्नी की पीडा : एक शहीद सैनिक की	87
27.	आदर्श चरित्र और जीवन मूल्यों की दरकार	88
28.	घायल धरा	89
29.	जहॉ चाह वहॉ राह	91
30.	आहवान: हिन्दी दिवस के अवसर पर	93
31.	मुझे क्यूँ शक है	94
32.	नैसर्गिक सुन्दरता होती निर्मल की	95

आमुख

अंग्रेज कवि पी.वी. शैले ने लिखा है "शीत ऋतु आती है तो क्या वसन्त ऋतु दूर होती है?" कवि का आशय है कि बुरे दिन आते हैं तो उसके बाद अच्छे दिन भी आते हैं। जीवन संघर्षों से भरा हुआ है लेकिन सुखद क्षण भी जीवन के ताने बाने का अंग है। श्री ओमप्रकाश गुप्ता जी द्वारा लिखी गई पुस्तक **"मेरी जीवन यात्रा"** मैंने पढी है, उनके जीवन का एक लम्बा अरसा मैंने काफी नजदीक से देखा भी है। उन्होंने अपने जीवन को बडी दृढता और जीवटता से जिया है। उनकी जीवन यात्रा में कवि की पंक्तियाँ बिल्कुल सत्य सिद्ध हुई हैं। श्री गुप्ता जी ने अपने जीवन की घटनाओं और अनुभवों को अपनी कलम से बडी विनम्रता से अपनी पुस्तक में सच्चाई और ईमानदारी के साथ चित्रित किया है। यहाँ तक कि, अपने व्यक्तिगत जीवन के बहुत से पहलुओं को बिना किसी संकोच के प्रकट किया है, जिससे पुस्तक में बरबस रोचकता और कौतूहल उत्पन्न होता है। तारीखों के साथ, सूक्ष्म से सूक्ष्म विवरण पिरोये गए हैं, उससे उनकी पारदर्शिता के प्रयास की सुन्दरता लगती है। ईश्वर के प्रति विश्वास के कारण सर्वोच्च

सत्ता का जो आशीर्वाद मिला है, उसे भी बडी निष्ठा व ईमानदारी से कृतज्ञ होकर प्रकट किया है।

श्री गुप्ता आशावादी, दायित्व के प्रति लगनशील और सजग है। जीवन यात्रा में मिली चुनौतियों को एक के बाद एक गले लगाना उनके व्यक्तित्व की विशेषता है, चुनौतियों से न तो घबराये और न ही पलायन किया है; उनके जीवन जीने का तरीका आगामी पीढी के लिए उत्कर्ष उदाहरण प्रेरणा स्रोत रहेगा। श्री गुप्ता जी ने ईश्वर के प्रति विश्वास के साथ "कर्म भी पूजा है" के सिद्धान्त को भी स्मरण रखा हैं।

इस पुस्तक में तीव्र भावनाओं को, शान्ति और आनन्द के क्षणों में बीते दिनों का चित्रण किया गया है। वे गणित के सफल शिक्षक रहे हैं। यह अति प्रसन्नता की बात है कि गणित शिक्षक होने के बावजूद भी साहित्य में रुचि रखी है। पुस्तक की विषय वस्तु काफी रोचक व मोहक है। पाठकगण बड़ी रुचि व उत्सुकता से पढेगे। मैं श्री गूप्ता जी को इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए शुभ कामनाएं प्रेषित करता हूँ।

ओम नारायण त्रिपाठी
अवकाश प्राप्त प्राचार्य
जवाहर नवोदय विदयालय

gमेरी जीवन यात्रा

अठारह वर्ष की आयु (1974)

बीस वर्ष की आयु (1976)

बाइस वर्ष की आयु (1978)

चौबीस वर्ष की आयु (1980)

छ्ब्बीस वर्ष की आयु(1982)

बासठ वर्ष की आयु(2018)

(विपन्न बालक से सम्पन्न अभिभावक तक)

अपनी बात

इस पृथ्वी ग्रह पर प्रत्येक प्राणी के वैयक्तिक जीवन निर्माण में सर्वशक्तिमान ईश्वर एक महान जादूगर की भूमिका अदा करता है, वह रहस्यमयी है और उसका प्रत्येक कार्य एक पहेली है। हमारे सोच से यह किसी भी प्राणी के कल्पना एवं अपेक्षाओं की सीमा से बाहर है, यह मानव प्रवृत्ति है कि वह सुख को आनन्द्पूर्वक उपभोग करता है परन्तु दुख की घडी को बिल्कुल स्वीकार नहीं करता, अतः वह चाहता है कि उसकी आगे की पीढियां हमसे अधिक सुख का उपभोग करे। उस पर दुर्दिन की छाया उन पर कभी न पडे परन्तु सुख दुख तो दिन रात की तरह परिवर्तनशील है। परमात्मा पूर्ण करूणा का सागर और सच्चिदानन्दस्वरूप स्वरूप है, वह जानता है कि जीवन में वास्तविक सुख की अनुभूति उन्हीं को होती है जो कठिन दिन को ओढे बिछाये होते हैं। पेड की सघन छाया का आनन्द उसी को मिलता है जिसने चिलचिलाती धूप में पसीना बहाया हो; वातानुकूलन में रहने वालों को यह आनन्द कभी नहीं मिलेगा। फिर भी मानव प्रवृति के अनुसार हमारी इस ब्रह्माण्ड के रचयिता से विनम्र प्रार्थना है कि वह अपने प्रिय लोगों को सब कुछ मुझसे अधिक दे जो हमने अपने जीवन पर्यंत स्वप्न

से परे आनन्द पाया है और वह अवसर कभी मत आने दे जो हमने विचलित करने वाली विषम परिस्थियों को असहनीय पीडाओं से झेला है।

इस अवसर पर हम अपने सम्पूर्ण जीवन में सर्वशक्तिमान ईश्वर की एक अभूतपूर्व कृति "अपनी प्यारी मॉ" को कभी भुला नहीं सकता। हमारे सम्पूर्ण जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन की आकांक्षा के लिए लिए उनके त्याग, अथक परिश्रम और सोच के वर्णन पर मैं निशब्द हूँ। मेरा विश्वास है कि कि उनका आशीर्वाद हमको और हमारे परिजनों को सदैव सम्बल प्रदान करता रहेगा।

श्री श्री अनन्त श्री आनन्देश्वर महाराज जी,
परमट, ग्रीन पार्क के पास, कानपुर, उ.प्र.

प्राक्कथन

मुझे अपने जीवन के बारे में कुछ लिखने का विचार मन में उस समय आया जब पहली बार मेरा शरीर बोस्टन शहर (उत्तरी अमेरिका) की पवित्र भूमि को स्पर्श किया। मुझे अपनी जीवन यात्रा के लिखने के पीछे का ध्येय यह है कि मैंने अपने जीवन पर्यन्त जो अनुभव किया, उसे भावी पीढी के साथ बात साझा करना आवश्यक है। मैं कोई वैज्ञानिक न्यूटन, अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहिम लिंकन राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, पं. जवाहरलाल नेहरू, महान भारतीय गणितज्ञ श्री रामानुजम जैसा विद्‌वान, आदर्श, सफलतम और बडा व्यक्ति और के.बी.सी. के मंच पर आये कर्मबीर व्यक्तियों जैसे नहीं, और न ही कोई स्तरीय उपलब्धि ही है कि मेरे जीवन दर्शन के पीछे विश्व चल पडे। फिर भी अगर मेरे हंसने, रोने, जगने, सोने, पढने, वास्तविक जीवन की हकीकत को ओढने, बिछाने, जीवन की आपा धापी और भविष्य का ताना बाना बुनने और समाज के साथ क्रियाओं प्रतिक्रियाओं आदि में कुछ सार है तो उनके जेहन में आना चाहिये। हो सकता कि उनके अपने भावी जीवन के कुछ अनुत्तरित सवालों के जवाब मिल जायें; अतएव इस दायित्व का शुभारम्भ हमने 21 मई दिन सोमवार 2017 किया।

मैंने जीवन संघर्ष में अपने सम्पूर्ण जीवन को एक समरभूमि की तरह अनुभव किया। हमारे अनुसार एक व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व के निर्माण में संबद्ध समाज और प्रकृति की क्रियायें, प्रतिक्रियायें एक अहँ भूमिका अदा करती है। समाज और प्रकृति उसके अस्तित्व को दाँव पर लगा कर उसकी परीक्षा लेती है, वे अपनी क्रियाओं से उसको मजबूत बनाती है इसलिए वह अपने बिभीषक प्रतिक्रियाओं से सामना भी कराती है। हमारा मानना है कि प्रकृति के नियमानुसार उसकी क्रियाओं के सामना हेतु प्रत्येक को तैयार रहना चाहिए एवँ अपेक्षित प्रतिक्रिया करनी चाहिए। किसी के सामने परिस्थियाँ कैसी भी हों, परन्तु उसका परिणाम सम्बन्धित व्यक्ति के सकारात्मक और नकारात्मक सोच और गृहण करने के तरीके पर निर्भर करता है। वह परिस्थितियों का सामना जिस दृष्टिकोण को लेकर करता है, बाद में वही दृष्टिकोण ही सम्बन्धित व्यक्ति के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बन जाती है। अन्य महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रत्येक को अपने जिंदगी की लडाई अकेले ही लड्नी पडती है अतः अपनी समस्याओं का सटीक उत्तर खुद खोजना है, सार यह है कि इच्छित सफलता पाने के लिए कभी भी प्रतिकूल दिनों में भी कभी विचलित नहीं होना चाहिए वरन दुगुने उत्साह से अपने लक्ष्य को पाने का प्रयास करना चाहिए।

इस अवसर पर हमें सम्माननीय कवि श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय जी "हरिऔध" की प्रसिद्ध कविता का पंक्तियाँ याद

हो रही हैं। हमारी समझ से हमारे जीवन की वास्तविकता इसके काफी पास से गुजरी है.

पंक्तियाँ निम्न प्रकार हैं-

ज्यों निकल कर बादलों की गोद से
थी अभी एक बूंद कुछ आगे बढ़ी
सोचने फिर फिर यही मन में लगी
आह क्यों घर छोड़ कर मैं यों बढ़ी।

दैव मेरे भाग्य में है क्या बदा
मैं बचूंगी या मिलूंगी धूल में
या जलूंगी गिर अंगारे पर किसी
चू पड़ूंगी या कमल के फूल में।

बह गई उस काल कुछ ऐसी हवा
वह समुंदर ओर आई अनमनी
एक सुंदर सीप का मुंह था खुला
वह उसी में जा पड़ी मोती बनी।

लोग यों ही हैं झिझकते सोचते
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर
किंतु घर का छोड़ना अक्सर उन्हें
बूंद लौं कुछ और ही देता है कर।

अपने जीवन यात्रा के बारे में लिखने के विचार आने के पूर्व हम सर्वशकितमान जगन्नियन्ता को इस बात की कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहता हूँ कि उसने हमें अपने जीवन की इस अभूतपूर्व यात्रा- (अ) बिडहर गाँव [सरयू नदी (घाघरा नदी की सहायक नदी) के किनारे का गाँव] अयोध्या, भारत से ऑरेंज स्ट्रीट, बॉल्थम शहर [चार्ल्स नदी के किनारे का शहर] बोस्टन, उत्तरी अमेरिका तक (ब) यादव प्राथमिक शाला, ग्वालटोली, कानपुर, उ.प्र. की शिक्षा से राष्ट्रीय शैक्षिक एवं अनुसंधान परिषद परिसर, नई दिल्ली में राष्ट्रीय गणित दिवस पर सेमिनार में वार्तापत्र प्रस्तुत करने तक (स) ग्वालटोली, कानपुर के किराये के घर से निजी आवास, ऋतम्भरा, अशोक नगर, नई बस्ती, कल्यानपुर, कानपुर, उ.प्र. तक, के वर्णन करने को हमारे मष्तिष्क और हाथों को ताकत एवं अवसर प्रदान किया।

मेरा आधार मेरी जन्मभूमि
(बिडहर गाँव)
अम्बेदकर नगर, उ.प्र.

से

मेरा अकल्पनीय स्वप्न
ऑरेंज स्ट्रीट, बॉल्थम
शहर, बोस्टन, उत्तरी
अमेरिका

(सरयू नदी के तट)

से

(चार्ल्स नदी का तट)

ओमप्रकाश गुप्ता

1.स्नेहमयी माँ की गोद से
(FROM BOSOM OF BELOVED MOTHER)

नियति द्वारा निर्धारित मेरा दुर्लभ मानव जीवन कठिन दिनों के दुखद क्षणों से प्रारम्भ जरूर हुआ परन्तु परमपिता परमेश्वर की कृपा से अकल्पनीय परम सुखद एवं सुनहरे क्षणों की ओर शनैः शनैः अग्रसर होता गया। इस अवसर पर सर्वशक्तिमान के बाद मैं अपनी सबसे प्यारी माँ को कभी नहीं भूल सकता जिसने मुझे विपन्न पुत्र के आधार से आदर्श अभिभावक (पिता) के रूप में प्रतिस्थापित किया। उन्होंने बाल्यकाल में केवल प्राइमरी तक की पढाई अपने पिता स्व. श्री रघुबीर गुप्ता (किसान) के घर गाँव फत्तेपुर (मोहिबपुर), जिला अम्बेदकर नगर, उ.प्र. में की। अल्प शिक्षित होने के कारण वह मुझे एक उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति बनाना चाहती थी। वह अक्सर कहा करती थी कि वह अपने पुत्र के शिक्षा को बरकरार रखने की कीमत पर किसी प्रकार का भी काम करने के लिए कभी नहीं हिचकेंगी। अपने कठिन दिनों के दौरान उन्होंने एक उद्योगपति श्री अमरनाथ गुप्ता, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, भारत शक्ति डीजल इंजन पंपिग सेट, के

स्थानीय बंगले में महिला रसोइयें और श्री लाल बहादुर शास्त्री जूनियर हाई स्कूल, ग्वालटोली, कानपुर में चपरासी का काम करने लगी थी।

मेरे माता पिता

(स्व0 महावीर प्रसाद गुप्ता एवं स्व0 लक्ष्मी देवी गुप्ता)

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

यह दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि मैं अपने जन्मभूमि (गाँव बिडहर खास) तात्कालिक परिस्थिति, गाँव के परिजनों और अपने जन्मदिन के बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानता। अतएव मुझे और मेरी को माँ मेरे जन्मदिन की ठीक तारीख का पता नहीं। यह मेरा अनुमान है कि मेरा परिवार मुख्यतः गाँव के तात्कालिक कुरीतियों और अंधविश्वासों से अभिशप्त था। मेरी माँ मे अनुसार उनके दो सन्तान की मृत्यु कुछ महीनों के उपरांत ही हो गई थी। जब मैंने उनके तीसरे सन्तान के रूप में जन्म लिया लिया तब वे हमारे जीवन के प्रति बेहद चिंतित थी कुछ अज्ञात कतिपय कारणों से वह गाँव से कानपुर चली आई थी मैं भी डेढ वर्ष की आयु में गम्भीर रूप से दूसरे स्तर के निमोनिया बीमारी से पीडित हो गया था। मेरी माँ को मेरे जीवन बचाने के लिए खर्च के लिए कुछ भी नहीं था, वह शहर में एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल एवं एक डाँक्टर से दूसरे डाक्टर के पास दर दर भटकती रहीं और हमारे जीवनदान के भीख के लिए दोंनो हाथ जोडकर रोती रहीं। अंत में एक मनुष्य के रूप में भगवान डाँ नवीन चन्द, नवाबगंज, कानपुर के क्लीनिक गई और "मेरे बच्चे को बचा लो. मेरे पास जीवन बचाने हेतु खर्च करने के लिए कुछ भी नहीं है।" यह गिडगिडा कर उनके पैरों पर गिर गई। उन्होंने परिस्थिति को भाँपा और

हमारा निःशुल्क इलाजकर ठीक कर दिया, वस्तुतः मै अपने सामाजिक और आर्थिक रूप से कमजोर परिवार का एक लडका था। उस समय मेरे से 3 वर्ष छोटी बहन "कु0 सूरजमुखी" भी थी। मै बिडहर गाँव, जिला अम्बेदकर नगर से कानपुर शहर तक के इस पूरे कारुणिक वृतांत से पूर्णतः अनभिज्ञ और अबोध था। एक लम्बे समय, लगभग 40 वर्षों के पश्चात मैं फुफेरी बहन की मदद से अपनी जन्मभूमि (बिडहर गाँव) गया और परिजनों से मिला।

मेरी जन्मभूमि बिडहर(गाँव) के परिजन

मेरी बहन "सूरजमुखी देवी"

फ़ूफ़ेरी बहन

ममेरी बहन

मेरे पिता अनपढ होने के कारण शिक्षा के महत्व को नहीं समझते थे, वे सोचते थे कि लोंगो को शिक्षित करना व्यर्थ का समय और धन बर्बाद करना है, वे अक्सर कहते थे कि हम अनपढ होकर भी शुरू से ही इस शहर में पूरे परिवार का भरण पोषण करते हैं इसके लिए शरीर में ताकत का होना आवश्यक है, शिक्षा नहीं। परिणामस्वरूप हमारी शिक्षा के प्रोत्साहन के बिल्कुल बिरुद्ध थे, अतः उनकी प्रत्येक क्रिया आगे की हमारी पढाई को अवरुद्ध करने के हेतु रहती थी, परन्तु मेरी माँ ने मेरी शिक्षा का पूर्ण रूप से समर्थन किया मेरी प्राइमरी कक्षाओं की पढाई पूर्णतः उनके निर्देशन में हुई। विद्यालय के समय के बाद घर पर प्राथमिक कक्षाओं की पढाई का पूरा भार स्वयं उठाया, उन्होंने अपनी दृढ इच्छा शक्ति से मुझे शिक्षित करने के अथक प्रयास किये। उन्होंने मिट्टी की छोटी छोटी गोंलियाँ बनाकर उसकी मदद से गणित के जोड, घटाना, गुणा और भाग करने की प्रक्रियायें समझाई. मुझे कक्षा 4 के स्तर पर 30 तक पहाडे याद थे। उनका निर्देशन इतना प्रभावशाली था कि मुझे अध्ययन के प्रति नशा हो गया। मैं पढाई के आगे अक्सर नाश्ता खाना भूल जाता था और पढाई में लिप्त होने के कारण समाज एवं समकक्ष साथियों से अलग थलग हो गया। मुझे पढाई के अलावा किसी भी अन्य क्रिया कलापों में कोई रुचि ही नहीं रही। मेरे पिता अक्सर रात में सोने के पहले लगभग एक घंटे तक गाँव के प्रचलित बडे

किस्से सुनाते थे। ये किस्से हमारे मस्तिष्क में सुनहरे जीवन के रचनात्मक तथ्य, स्वस्थ और सजग कल्पनाओं से युक्त यथार्थ सपनें बुनते थे। वे एक हस्तरेखा विशेषज्ञ भी थे उनकी कई भविष्यवाणियाँ मेरे जीवन में सही साबित हुई वे अक्सर कहा करते थे कि हर मनुष्य की किस्मत ढाक के पत्ते के नीचे ढकी होती है, जब सही वक्त की बयार बहती है तो पत्ता उड जाता है और किस्मत चमकने लगती है।

"महाभारत का दृष्टांत बताते हुए कहते थे कि कुरुक्षेत्र के रण में पेड की डाली पर टिटहरी पक्षी ने दो अंडे अपने घोसले में दे रखे थे। दोंनो ओर की सेनाओं के भगदड में हवा के झोंके से वे अंडे घोसले सहित जमीन पर आ गये थे, माँ टिटहरी अपने अंडों को भगदड में नष्ट होने की आशंका से परेशान थी, पर वह कर कुछ नहीं सकती थी। अंत में एक हाथी का दल उन अंडो के पास से गुजरा तो मां टिटहरी जोर से चिल्लाई। पर वह असहाय थी, पर कुदरत के करिश्मे से एक हाथी के घंटे की जंजीर टूट गई और घंटा ठीक अंडे के ऊपर गिरा और अंडे उसके भीतर सुरक्षित हो गये. यह कहानी आज भी हमको बडा सम्बल और जीवन के जीवटता की प्रेरणा देती है।"

बाल्यकाल में मैंने अपनी प्राथमिक शिक्षा अपने घर के पास यादव स्कूल प्राथमिक शाला (1961-65) में तथा जूनियर कक्षाओं की पढाई (1966 से 1969 तक) कानपुर के नगर

पालिका खलासी लाइन शाखा के विद्यालय में की। मैंने वहाँ (कक्षा 6 से 8 तक) 37 पैसे की नाममात्र मासिक शुल्क के साथ मेधावी छात्र के रूप में 5.00 रुपये प्रति माह की छात्रवृत्ति भी प्राप्त की. मै प्राथमिक और मिडिल स्तर तक मेधावी छात्रों में से एक था।

जूनियर हाई स्कूल भवन

खलासी लाइन (अध्ययन काल 1966-1969)

बी.एन.एस.डी. इण्टर कॉलेज

(अध्ययन काल 1969-1973)

आदरणीय श्री रेवती लाल यादव,विज्ञान शिक्षक हमारे कक्षा अध्यापक थे, वे हमारे बहुत आदर्श शिक्षक थे, वे मुझे बहुत प्यार करते थे। सत्र 1966-67 (कक्षा 6) में अँग्रेजी शिक्षक के रिटायर हो जाने पर इस विषय में पूर्णतः रिक्तिता आ गई थी और यह लगभग पूरे तीन सत्र तक बनी रही। ऐसे में हम सभी विद्यार्थियों के भविष्य को दृष्टिगत रखते हुए आदरणीय श्री यादव जी ने अपना विज्ञान विषय के अतिरिक्त अँग्रेजी विषय के साथ व्याकरण को भी पढाया। ऐसे शिक्षक ही विद्यार्थी के जीवन एवं विद्वत समाज के लिए उदाहरण बनकर धन्य हो जाते है। 8वीं बोर्ड की परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात मुझको इन्होंने 9वीं और 10वी के गणित के प्रश्नों को हल करने मेँ मदद करते थे। मेरे द्वारा ऐसे शिक्षक जीवन पर्यंत नहीं भुलाये जा सकते, मै इनका आजीवन ऋणी और आभारी रहूँगा।

2-किशोरावस्था में संघर्ष
(STRUGGLE AT ADOLESCENCE STAGE)

मेरे पिता सन 1965 के आस पास स्थानीय एल्गिन सूती मिल्स, कानपुर में एक कर्मचारी थे.कुछ अप्रिय घटना के कारण उनको नौकरी छोडनी पडी और वे बेरोजगार होकर सडक पर आ गये। यह असहनीय काल 3 वर्ष के बाद आंशिक रूप से खत्म हुआ; वर्ष 1968 में उन्होंने विक्टोरिया सूती मिल्स, ग्वालटोली, कानपुर में कैजुअल कर्मचारी के रूप में नौकरी शुरू की; अब वे अपने परिवार के लिए अल्प वेतनभोगी व्यक्ति हो गये। वे छुट्टी के दिनों में पास के एक मुस्लिम परिवार के बंगले मेँ सिविल मजदूर का कार्य भी करने लगे,एक दिन काम करते समय एक ईट उनके पैर पर गिर गया और उनके पैर का अंगूठा काफी जख्मी हो गया; इसी कालखंड में मेरी माँ ने अक्टूबर 1968 (तारीख याद नहीं) में एक बालक को जन्म दिया जिसकी जन्म के 6 दिनों के बाद जमोगा (टिटनिस) नामक बीमारी से मृत्यु हो गई थी। इस समय हम लोंगो के खाने और दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करना बहुत ही कठिन हो गया. अक्सर मुझे जीविका के लिए उनके अंशकालिक कार्यों में सहयोग के लिए बाध्य होना पडता था अतएव मैं उनके हाथ से खींचनें वाले ठेले पर हरी सब्जियों को बेचने वाले काम में शामिल होता था; धनोपार्जन के लिए मुझे रात्रि में हाथ या

पैर से खींचने वाला रिक्शा चलाना पडता था। घर में हम लोग (लघु उद्योग व छोटा कारोबार) जैसे पुराने अखबार व बाँसी कागज के लिफाफे और पानी के गोलगप्पे बनाने का काम करने लगे थे।

सहृदयी प्रकृति ने मुझे किशोरावस्था व्यतीत करने के लिए 2.5 मी0×3.5मी0 के आकार का एक कमरा (जिसमें खिडकी 1फुट×1फुट थी और उसमें एक खुला आँगन था।) बिल्डिंग के तीसरे मंजिल पर प्रदान किया था जिसकी छत एक बहुत पुरानी जी.आई. शीट थी जो लोहे के चार बडे एंगिल पर टिकी थी और ऊपर से सीमेंट की स्लेप थी। पीने के लिए मैदान में निर्मित एक सामुदायिक कुँए से पानी खींच कर लाना पडता था यह क्षेत्र कानपुर नगर के मलिन वस्तियोँ (हाता) के नाम से जाना जाता था, यह कमरा पूरे वर्ष सभी मौसम की मार झेलने के लिए बिल्कुल उपयुक्त था। गर्मी के दिनों में इसका अधिकतम ताप 40 डिग्री सेल्सियस हो जाता था; बरसात में पुरानी जी.आई. शीट से जंग लगा लाल पानी रिसता था जो पहनने वाले कपडों को भी लाल धब्बे का कर देता था; जाडे के दिनों में यह 10 डिग्री सेल्सियस का हो जाता था। मैं स्कूल व कॉलेज के गणवेश का नियमित रखरखाव नहीं कर पाता था। मिट्टी के तेल का लालटेन घर की रोशनी और अन्य कार्यो (अध्ययन हेतु भी शामिल) के लिए प्रयोग होता था। इस

प्रकार के वातावरण ने मेरे स्वभाव को जिद्दी और आक्रोशित बना दिया था।

(रोशनी एवं अन्य कार्यो के लिए)

ग्वालटोली,कानपुर, जहाँ मैंने 23 वर्ष बिताए

अब (सन1970 में) पिता जी ने दूसरी जगह अर्थटन वेस्ट काटन मिल्स, अनवर गंज कानपुर में एवजीदार कर्मचारी के रूप में कार्य शुरू किया, यह स्थान अपने निवास स्थान से लगभग 10 कि.मी. दूर है। वह वहाँ प्रतिदिन शिफ्ट ड्यूटी के लिए पैदल ही जाते थे, इस समय मैं बी.एन.एस.डी. इण्टर कॉलेज, चुन्नीगंज, कानपुर में 9वीं कक्षा का विद्यार्थी था जो हमारे निवास स्थान से 2.5 कि.मी. दूर है। पिता जी का उपरोक्त मिल्स में कार्य करते समय जनवरी 1971 में एसिड की ट्रॉली खींचते समय पैर फिसल गया और बॉटल टूट जाने से एसिड फैलाव से उनके दोंनो पैर जलकर जख्मी हो गए, फलस्वरूप वे लगभग 2 माह तक राज्य कर्मचारी अस्पताल, पाण्डुनगर, कानपुर में भर्ती हो गए। इसी काल के दौरान मुझे

उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, इलाहाबाद द्‌वारा आयोजित सत्र 1971 की 10वीं कक्षा की परीक्षा में मुझे शामिल होना था; परन्तु इन कतिपय परिस्थितियों के कारण मैं आखिरी 3 माह की कॉलेज की फीस नहीं दे पाया; शिक्षण फीस आधी माफ होने के बावजूद फीस अदा न कर पाने के कारण गम्भीर समस्या खडी हो गई थी। 10वीं बोर्ड की परीक्षा हेतु प्रवेश पत्र प्राप्त करने के लिए फीस अदा करना अत्यंत आवश्यक था, अंत में मैं और मेरी माँ अपने कक्षा अध्यापक श्री सालिग राम गुप्ता जी के पास गये, मेरी माँ ने उनको अपनी पूरी परिस्थिति के बारे मेँ बताया परिस्थिति को गम्भीरता को भाँप उन्होंने ईश्वर की प्रेरणा और उदारता के कारण, शुल्क अदा कर मुझे प्रवेश पत्र दे दिया अंततः मैं 10वीं बोर्ड परीक्षा में शामिल हुआ।

मैं प्रायः अपना अध्ययन, लगभग पूरे दिन घर के नजदीक नगर पालिका के बृजेंद्र स्वरूप पार्क में और रात्रि में घ्रर के बाहर खुले आँगन में लालटेन की रोशनी के साथ अथवा स्ट्रीट लाइट के नीचे, करता था। उपरोक्त पार्क उस समय शांत, स्वच्छ वातावरण और घने हरे भरे पेडों से युक्त था, मैं इस अवसर पर उदार प्रकृति को आत्मीय धन्यवाद दूँगा कि उसने मुझे अध्ययन के लिए इस प्रकार का समुचित स्थान प्रदान किया। मैं घर के विभिन्न मसलों और दैनिक आवश्यकताओं को छोड अपने अध्ययन पर गम्भीरता से ध्यान देना चाहा, हालांकि घर के मसले मस्तिष्क के तंत्र को

झकझोरते रहते थे, अंततः मैं 10वीं बोर्ड, 1971 की परीक्षा 55% अंक से उत्तीर्ण किया।

अब इस समय मुझे अपनी आगे की पढाई और घर के दैनिक आवश्यकताओं हेतु धन अर्जन के बीच सामजस्य स्थापित करना अत्यंत आवश्यक हो गया था। मेरे पिता इस झकझोरने वाली परिस्थितियों से सामना कराने हेतु बहुत कठोर हो गये थे, इसका कारण उन्हें अपने आश्रितों (माँ, मैं और मेरी दो बहनें) के दैनिक भरण पोषण की बिगडती दशा से हो सकता था। अतः मैं 12वीं बोर्ड परीक्षा के दो माह पहले अपने घनिष्ठ और सहपाठी मित्र श्री बृजराज माली के घर पढने के लिए चला गया, कुछ भी हो मैं 12वीं बोर्ड 1973 की परीक्षा उत्तीर्ण हुआ. इस परोपकारी कार्य के लिए इनका आजीवन आभारी रहूँगा।

श्री बृजराज माली

स्वभावतः भगवती सरस्वती माँ से हालात से कौशल और सहनशीलता से निपटने हेतु अपेक्षित मानसिक अवस्था, धैर्य और बुद्धि देने की आत्मीय प्रार्थना करता था इसलिए मैं अपनी डायरी में दैनिक परिस्थियों पर कुछ पंक्तियाँ लिखा करता था क्योंकि मुझे लगता था कि परिस्थितियाँ का नियंत्रण हमारी क्षमता के बाहर है। मैंने अपने पडोसियों के बच्चों को 10 रू प्रति माह पर ट्यूशन पढाना शुरू किया, प्रारम्भ में कुछ अभिभावकों ने समुचित और समय पर शुल्क न देकर मेरा शोषण भी किया क्योंकि मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। एक घटना 13 अक्टूबर 1975 को उद्धृत करने को मैं अपने को नियंत्रित नहीं कर पाया बल्कि लिखकर रोया यह उदधरण मेरे पिता जी की कठोरता भरी क्रियाओं के बारे थी जो मेरी शिक्षा को पूर्णतः बन्द करने और प्रगतिशील कदम को रोकने में चट्टान बनकर खडे थे। उनकी उद्वेगी इच्छा थी कि यह लडका अपनी पढाई बन्द कर किसी भी प्रकार से यह धन की कमाई करके हमको सहयोग करे, परन्तु मैं और मेरी माँ इसके तात्कालिक पक्ष मेँ नहीं थे। इस बात से वे अत्यंत नाराज होकर उन्होंने घर में राशन की व्यवस्था नहीं की एवं उन्होंने कई दिनों तक खाना नहीं बनने दिया, वे पास के एक होटल या किसी के घर में खाना खा आते थे। मै और मेरी माँ बहुत भूखे थे मेरे पास ट्यूशन से मिले 10 रू जेब में थे, मैंने उन रूपयों से बाजार से पिसा आँटा और सब्जियाँ लिया तब माँ ने

भोजन बनाया। 3 दिनों के बाद राशन खत्म हो गया मेरे पास अब खर्च के लिए रूपये नहीं थे। तब पडोस के श्री हरिभजन यादव (कर्मचारी, विद्‌युत विभाग) ने 30 रू उधार दिए तब मैं घर में 15 दिनों के लिए खाने की सामग्री ला पाया।

इसी तारतम्य में एक जीता जागता दृष्टाँत को लिखने से मैं अपने को नही रोक पा रहा हूं कि भूख की आग किस प्रकार मनुष्य को कुछ भी करने को विवश करती है ।

कुछ कतिपय परिस्थिति वश एक दिन मैं सुबह का नाश्ता पूरी तरह कर भी नहीं पाया कि मुझे 8 बजे प्रातः सिविल के ठेकेदार के साथ स्थानीय एल्गिन मिल्स में मजदूरी करने चला गया, वहाँ मुझे 2.5 फीट×2.5 फीट के कई पत्थर ट्रॉली से खींच कर एक निर्धारित स्थान पर रखने को कहा गया। मध्यान्ह भोजन तक मैंने इस काम को किया फिर एक समोसा खा पानी पीकर थोडा आराम करके पुनः काम करने लगा, अब ट्रॉली खीचनें के लिए हाथों में ताकत पहले जैसी नहीं रही। कुछ देर तक पत्थर ट्रॉली में रखकर खींचता रहा अचानक ट्रॉली का हत्था हाथों से छूट गया और पैर की एडी पर गिर पडा, एडी लहूलुहान हो गया और मैं बैठ गया सूचना मिलने पर ठेकेदार आया। उसने मुझे फैक्टरी के डिस्पेंसरी ले जाकर एडी की ड्रेसिंग करवायी और आराम करने को कहा, अंत में उसने 15 रू दैनिक मजदूरी देकर घर भेजा। पुनः माँ ने नहीं भेजा।

इन्हीं दिनों मैंने अंग्रेजी टाइपिंग को सीखने के लिए घर के पास के टाइपिंग इस्टिट्यूट में रू. 10.00 प्रति माह पर जाने लगा साथ ही बी.एस.सी. (संस्थागत) विद्यार्थी के रूप में वी.एस.एस.डी. कॉलेज, कानपुर उ.प्र. में प्रवेश तो लिया पर कोर्स की पुस्तकों के अभाव में रहा। मैं पुस्तकालय की उधार ली गई पुस्तकों पर निर्भर रहा, चाहे जैसे भी मैंने बी.एस.सी. की परीक्षा 1976 में विद्यालयीन कानपुर विश्वविद्यालय, उ.प्र. से पास कर ली।

3- कठिन दिनों में छोटे छोटे प्रयास
(My LITTLE EFFORTS IN HARD DAYS)

इन दिनों मैं 3:30 प्रातः (1974-76) उठ जाता था और दैनिक क्रिया से निपटने के बाद नित्य लगभग 1:30 घंटे स्वाध्याय करता था, मैं प्रतिदिन प्रातः 7:00 बजे सूटरगंज (दिवेदी परिवार एवं अन्य) घर जाकर ट्यूशन पढाता था मैं 9:00 बजे घर आ पाता था और तैयार होकर पढने के लिए कॉलेज चला जाता था अंत में 4:00 बजे शाम को घर वापस आता था। शाम को ही एक अभिभावक श्री हरिशंकर दिवेदी जी (एक ट्यूशन छात्र के अभिभावक) अंग्रेजी शार्टहैण्ड की निःशुल्क अभ्यास कराते थे, पुनः प्राइवेट ट्यूशन के लिए चला जाता था और लगभग 9:30 से 10:00 बजे के बीच घर वापस आता था। कुछ क्षण आराम करने के बाद मैं स्बाध्याय हेतु 10:00 से 11:30 बजे रात्रि तक बैठता था यह दिनचर्या उस कालखंड की अभिन्न अंग थी। मैं स्वाध्याय हेतु और अधिक समय देना चाहता था परन्तु काफी थकान के शरीर और दिमाग अनुमति नहीं देता था। इसी बीच शीघ्र और सरल आवागमन के लिए मैंनै ट्यूशन के एक बच्चे के अभिभावक से 90 रूपये में पुरानी साइकिल खरीदी।

मेरे माता पिता जी ने मेरे से तीन वर्ष छोटी बहन सूरजमुखी का विवाह करने का निश्चय किया जबकि उस समय

आयु 14 वर्ष की थी। मै इस स्थिति में उसके विवाह के पक्ष में नहीं था मैंने उनको इसके लिए जल्दीबाजी न करने की सलाह भी दी थी। मैंने उनको भरोसा भी दिलाया कि यदि वे उसके विवाह के 2 वर्ष के बाद की योजना बनायेंगे तो कार्यक्रम में आर्थिक रूप से भी सक्रिय भूमिका भी निभाऊँगा, परन्तु उन्होंने मेरी सलाह नहीं माना और उन्होंने मई 1974 में उसका विवाह निश्चित कर दिया। मैं असहाय था पर उन्होंने उसके विवाह में 2000 रूपये खर्च किये। 25 दिसम्बर 1974 को मेरी माँ ने एक बच्ची को जन्म दिया उसको हम गायत्री नाम से पुकारते थे।

इसी दरम्यान गर्मी के अवकाश के सदुपयोग के विचार से मैंने संस्थाओं सर्वोदय मंडल, आर्यनगर और गाँधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र, सिविल लाइन, कानपुर की सदस्यता ले ली। मैंने सर्वोदय (गाँधी, विनोवा, गोखले एवं तिलक) एवं रामकृष्ण मिशन (स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द) की साहित्य, उनकी जीवनी और वाँड्ग्मय आधारित पुस्तकें उपन्यास, समाचार पत्र "यूथ फाँर डेमोक्रेसी- 'सर्वोदयी नेता जय प्रकाश नारायण' की विक्री जिला न्यायालय, कानपुर के प्राँगण में, माँल रोड के फुटपाथ पर और जे.के. मन्दिर के पीछे गेट, पाण्डु नगर पर विक्री करने लगा. मैं विनोबा जी के "तरूण शांति सेना" सँस्था में सक्रिय सदस्य रहा। इस संस्था के माध्यम से टीम के साथ छोटे छोटे सामाजिक कार्य जैसे जिला

न्यायालय में सरकारी कर्मचारी (अर्दली, पेशकारों) का मुवक्किल से घूस लेने से रोकना, थाना इंचार्ज को रिक्शा चालक के किराये के पैसे देने को कहना, अवैध शराब की बोंतलों के स्टॉक को चौराहे पर ला कर आग के हवाले करना और जनता में जागरूकता पैदा करना इत्यादि। परन्तु 1974 में तत्कालीन केंद्रीय सरकार के द्वारा आपातकाल लगा देने के कारण इन सभी क्रिया कलापों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। अब मैं अपनी स्नातक की डिग्री पूरा करने के लिए अपना पूरा दिन अध्ययन पर केंद्रित करने लगा।

4-भविष्य के जीवन की दहलीज
(THE THRESHOLDS)

इस शीर्षक का वृतांत को लिखने के दौरान सर्वशक्तिमान के उदार कृपा के द्वारा आने वाले कुछ देवदूतों को कभी भूल नहीं सकता। इन व्यक्तियों ने हमारे जीवन में केवल हस्तक्षेप ही नहीं किया, बल्कि हमारे जीवन रूपी गाडी के पहिए की दिशा बदलने में धुरी का काम किया। मैं इन लोंगो का तहे दिल से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, साथ ही मैं अपने जीवन प्रवाह में ऐसे व्यक्तियों के माध्यम प्रदान करने के लिए करूणा के सागर सर्वशक्तिमान ईश्वर का आजीवन ऋणी रहूँगा, जिन्होंने मुझे पुस्तक, काँपियां दान प्रदान करके, औपचारिक एवं अनौपचारिक कपडे प्रदान करके, मेधावी व काँलेज के निर्धन बालक कोष से सुविधा प्रदाय हेतु, स्कूल/काँलेज में निःशुल्क शिक्षण शुल्क की सुविधा प्रक्रिया मेँ परोक्ष और अपरोक्ष रूप से सक्रिय होकर और जीवन में कर्मठता एवं जीवटता सिखा कर मेरे भावी सुखद जीवन की आधारशिला रखी। इस अवसर पर सन 1972 में "श्री गोपाल कृष्ण मिश्रा जी" प्रवक्ता, रसायन विभाग और हमारे 11वीं के कक्षा अध्यापक, ने न केवल संबधित विषय में मार्ग दर्शन किया वरन प्रयोगशाला में रखी पुरानी प्रयोगपुस्तिकाओं को दिलाया क्योंकि इनमें एक तरफ खाली होते थे उन्होंने इन पेजों में

विभिन्न विषयों के नोट्स लिखने और गणित के प्रश्नों के अभ्यास के लिए सदुपयोग हेतु प्रेरित किया। "श्री इष्ट पाल सूद जी" प्रवक्ता, गणित विभाग ने वर्ष 1973 में नाममात्र के शुल्क (20 रू. प्रति माह) पर उत्कृष्ट स्तर का गणित सिखाया जो मेरी जीविका और सुखद भविष्य का आधार बना।

कृतज्ञता ज्ञापित करने के इसी तारतम्य में, मैं प्रवक्ता (हिंदी) "स्वर्गीय श्री चन्द्र भूषण त्रिपाठी" (पूर्व एम.एल.सी., उत्तर प्रदेश सरकार) को उनके किए गए उपकार को कभी नहीं भूल सकता। उन्होंने मुझे जाडे में ठंड से सुरक्षा हेतु, हमारी 11वी कक्षा के सहपाठियों को सामुहिक सहयोग के द्वारा मुझे एक पूरी बाँह का ऊनी स्वेटर देने के नेक काम के लिए प्रेरित किया। इतना ही नहीं उन्होंने शाम को अपने छात्रावास कार्यालय बुलाकर मुझे एक शर्ट भी दी। मैं करूणा के सागर ईश्वर से उनकी आत्मा को चिर शांन्ति और उनके परिवार के सदस्यों को इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की शक्ति देने की प्रार्थना करता हूँ।

किसी व्यक्ति के जीवन में उसके सहृद और आत्मीय मित्र का सहयोग, उसके व्यक्तित्व की बृद्धि और विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। ऐसे अवसर पर मैं अपने हृदय मित्र "श्री बृजराज माली" को आत्मा भर याद करना चाहूँगा। मेरे विचार के अनुसार उसने हमारे चारों ओर निर्मित वातावरण को काफी नजदीक से महसूस किया, उसने लगभग

10 व 11 वर्ष की आयु में अपनी माँ को खो दिया था। मेरे और उसके बीच वार्तालाप से यह महसूस किया कि उसके, अपनी सौतेली माँ और उसके भाइयों के बीच गहरे मतभेद थे, उसने हमें अपनी क्षमता के अनुसार पूर्ण रूप से वैचारिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक रूप से सहारा दिया। मैं उस क्षण को कभी नहीं भुला सकता जब 1976 में बी.एड. के प्रवेश के समय उसने 250 रू. की महत्वपूर्ण मदद की थी, भले ही अब इस समय इस धन का महत्व न हो, परन्तु उस क्षण मदद के लिए उसका हाथ बढाना मेरे जीवन के लिए बहुत मायने रखता था जिसको मैं कभी अदा नहीं कर सकता।

अब मै अपनी अंतरात्मा की भावना के अनुरूप बेहतर ज्ञापन देने के लिए मैं उसके खोज का प्रयास करता रहा। अंत में मैने इलेक्ट्रानिक सोशल मीडिया "फेसबुक" के माध्यम से खोज ही लिया। इन 43 वर्षों के एक लम्बे अंतराल के बाद उसकी खोज ने हमको आत्मिक संतुष्टि के विचार से पूर्णतः लबालब कर दिया। अब मैं किसी भी तरह उससे मिलने के अवसर को खोना नहीं चाहता था. अब मैंने उससे मिलने के लिए उसके पैतृक गाँव, जिला गोण्डा, उ.प्र. जाने का निश्चय किया वह समय आया और मैं उससे 25 अप्रैल 2019 को उसके पैतृक जिले में मिला। यह मेरे जीवन के सर्वाधिक सन्तोष और आनन्द का दिन था कि मैंने इस व्यक्ति को फेसबुक और मैसेंजर के माध्यम से अक्टूबर 2018 में खोजा

और अब व्यक्तिगत साक्षात्कार हो गया। .इसके लिए मैं उस व्यक्ति का ह्रदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिसकी वजह से मैं इस व्यक्ति को खोजने में समर्थ रहा।

1977 में बी.एड. करने के बाद मेरे जीवन की दिशा का मोड आया यह मुझको मानक या अच्छे ट्यूशन के रूप में प्रारम्भ हुआ, परन्तु ट्यूशन का प्रारूप वही रहा (अर्थात विद्यार्थियों के आवास पर जाकर सेवा देना); ये ट्यूशन सम्मानीय डाँ टी.पी. मिश्रा जी (प्रोफेसर, बी.एड. विभाग, वी.एस.एस.डी. डिग्री काँलेज) डाँ के.एन. सिन्हा (प्रोफेसर डी.ए.वी. डिग्री काँलेज) कानपुर, उ.प्र. और अन्य उदार व्यक्तियों के संस्तुति से प्राप्त हुए, इससे मेरी कुछ आर्थिक स्थिति में सुधार अवश्य हुआ। अब यह समय मेरे लिए नौकरी के लिए रिक्तियों को खोजना और पात्रित पदों पर आवेदन देने का भी था। महत्वपूर्ण बात यह थी कि इन दिनों मुझे अपने व्यकितगत खर्चे, दैनिक आवश्यकताओ को पूर्ति, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, साक्षात्कार और घर के अनुपयुक्त वातावरण के सन्तुलन बनाये रखने को था। इसी बीच मैंने व्यक्तिगत तौर पर एम.ए. (अर्थशास्त्र) सन 1979 में कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर से उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात मैंने जून 1980 में एक प्राइवेट फर्म मेसर्स भारत इलेक्ट्रिल्स लि. (भारत शक्ति डीजल इंजन पम्पिंग सेट के निर्माता), ब्रह्म नगर, कानपुर में क्रय सहायक (सामग्री) के पद पर रू. 239.50

प्रति माह के वेतन पर कार्य किया; इस कार्य के अतिरिक्त मैं घर जाकर प्राइवेट ट्यूशन सेवा को जारी रखा।

डॉ टी0पी0 मिश्रा
रिटायर्ड प्रोफेसर,
बी.एड. विभाग

श्री शिवशंकर तिवारी
भूतपूर्व फोरमैन,
आर्डिनेंस फैक्ट्री,
कानपुर

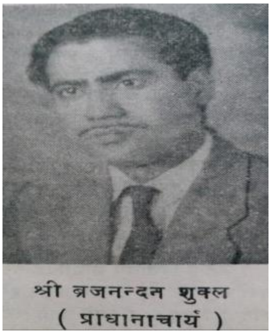

हिंडाल्को हायर
सेकेंडरी स्कूल
बिडला इंटर कालेज
रेनूकूट, मीरजापुर
(उ0प्र0)

मैं अपने कुछ व्यक्तिगत समस्याओं का उपयुक्त और अंतिम उत्तर न मिल पाने के कारण अवसाद और गम्भीर रूप से चिंतित रहने लगा, शायद इसी वजह से ठीक से काम न सम्पादन कर पाने के कारण मुझे एक साल के भीतर ही छुट्टी कर दी गई। इसके बाद मैं अपने मित्र श्री प्रमोद कुमार चोपडा के माध्यम से एक सेल्स टैक्स के अधिवक्ता के यहाँ सेल्स टैक्स लेजर का काम सीखने लगा। इन दिनों मैं दिल, दिमाग से ईश्वर को घर पर प्रतिदिन महात्मा तुलसीदास रचित सदग्रंथ "रामचरित मानस" ग्रंथ का पाठ कर और नियमित शिव मंदिर

(आनन्देश्वर महादेव) परमट, ग्रीन पार्क, अपने को ईश्वर के निकट या शरण में मैनें ले जाकर उनसे मानसिक शांति तथा भावनात्मक सहारा लिया। कभी कभी मेरे अभिन्न मित्र श्री अनिल कुमार त्रिपाठी, (वर्तमान मेँ अवकाश प्राप्त, प्राचार्य, भारतीय विद्या भवन, ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली) मन्दिर चलने दर्शन हेतु मेरा साथ देते थे और गंगा तट पर विचरण करते हुए अध्यात्म की चर्चा भी कर लेते थे। निश्चित रूप से मुझे व्यक्तिगत तौर पर प्रगाढ विश्वास था और अब भी है; पता नहीं लोंगो को कितनी वास्तविकता लगे परन्तु मेरे इस विश्वास के अनुसार मेरे जीवन में चमत्कार हुआ। दैवयोग माह जून 1981 में एक सुनहरा क्षण आया मुझे ये आशीर्वाद के क्षण परम आदरणीय श्री शिव शंकर तिवारी जी और श्री रमा शंकर तिवारी जी के माध्यम से आया (इनको मैं सम्मान से चाचा जी कहकर पुकारता हूँ)। ईश्वर की प्रेरणा से इन लोंगो ने मेरे भविष्य के जीवन के बदलते विधा के बीज बो दिये।

5- आहत पर प्रशामक हवा की राहत

(Gust of breeze)

श्री तिवारी जी (बन्धु द्वय) श्री ब्रज नन्दन शुक्ला, प्राचार्य, हिंडाल्को हायर सेकेण्डरी स्कूल, (वर्तमान में ए.बी. बिडला इण्टर कॉलेज) रेणूकूट, जिला सोनभद्र (उ.प्र.) के कानपुर निवास स्थान पर गए और उन्होंने गणित अध्यापक हेतु साक्षात्कार के लिए मुझे शामिल करने का अनुरोध किया। तदनुसार उन्होंने मेरा साक्षात्कार लिया और मुझे सी.टी. ग्रेड के तदर्थ शिक्षक के रूप मेँ नियुक्त कर लिया, मैंने वहाँ 9 जुलाई 1981 को तदर्थ शिक्षक के रूप में पद भार ग्रहण किया मेरा वहाँ प्रारम्भिक वेतन 637.00 रुपये प्रति माह था। इसी दरम्यान मेरे पिता जी फरवरी 1982 को सेवानिवृत्त हो गये. अब मेरा पहला कर्तव्य मेरे आश्रित माँ पिता दैनिक आवश्यकताओं के प्रबन्ध को लेकर था सो मैं अपनी मासिक वेतन का का 45% से 50% राशि नियमित रूप से भेजने लगा।

मैंने वहाँ 9 जुलाई 1981 से 19 जुलाई 1984 तक सेवा की और 3 वर्ष से अधिक का शिक्षण अनुभव प्राप्त किया। यह स्कूल उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, इलाहाबाद से मान्यता प्राप्त था और उस समय मिर्जापुर जिले में प्रतिष्ठित विद्यालयों में से एक था। इस स्कूल के विद्यार्थी

अध्ययनशील, मेधावी और अनुशासित थे। कक्षाएं, पुस्तकालय और प्रयोगशालायें आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित थीं. स्कूल का प्राँगण भी बहुत आकर्षक था। तत्कालीन रेणुकूट का वातावरण शांत, नीरव और प्रदूषण रहित हरियाली से युक्त था। यहां पर दो प्रसिद्ध और मनोरम मन्दिर श्री रेणुकेश्वर और राधा कृष्ण मन्दिर, मुर्धवा भी हैं। उस समय मुर्धवा मन्दिर का वातावरण प्रशांत और नैसर्गिक था; इसके अतिरिक्त पास में संग्रहालय में स्थित मूर्तियाँ बरबस मेरे मन को अपनी ओर खींच लेती थी। राष्ट्र प्रसिध्द जल विद्युत शक्ति केंद्र, रिहन्द बाँध भी इस स्थान से लगभग 3 कि.मी. दूर है। शुरू में कुछ दिनों तक सभी नवनियुक्त शिक्षक दो समूहों में स्कूल में ऊपर में बने दो हॉल में ठहरे हुए थे कालांतर में सभी साथियों को संयुक्त आवास आवंटित कर दिये गये। मेरे पहले निवास सहयोगी श्री शिव प्रताप सिंह, पुस्तकालयाध्यक्ष थे और दूसरे निवास सहयोगी श्री ओमनारायण त्रिपाठी जी (वर्तमान मैँ अवकाश प्राप्त प्राचार्य जवाहर नवोदय विद्याल्य, कौशाम्बी, उ.प्र.) थे.श्री त्रिपाठी जी अत्यंत आत्मीय, आत्मीय, खुले विचार वाले, सहृदय और परवाह करने वाले व्यक्ति हैं बाद में वे हमसे और हमारे माँ पिता से बहुत आत्मीय हो गए।

रेलवे स्टेशन,रेणुकूट

रेणुकेश्वर मन्दिर, रेणुकूट

मेरी पहली कर्मभूमि, सोनभद्र

(9जुलाई 1981-
19जुलाई1984)
हिंडाल्को स्कूल का स्टाँफ

हिण्डाल्को काँलोनी का
(तत्कालीन) विहंगमदृश्य

रिहन्द बाँध, तुर्रा रेणुकूट,
सोनभद्र

इन्हीं दिनों मैं शिक्षा के क्षेत्र में अच्छे अवसर के लिए दैनिक राष्ट्रीय समाचार पत्र "दि हिंदुस्तान टाइम्स" टाइम्स" में प्रकाशित रिक्तियों में आवेदन करता रहता था। इसी तारतम्य में 15 अक्टूबर 1983 को प्रकाशित विज्ञापन के आधार पर भारत सरकार के सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम "राष्ट्रीय खनिज उत्पाद निगम (इस्पात एवं खान मंत्रालय के आधीन) की इकाई बैलाडिला लौह अयस्क परियोजना, किरन्दुल, जिला-दन्तेवाडा, छत्तीसगढ राज्य", के सीनियर सेकेंण्डरी स्कूल में सहायक शिक्षक के पद आवेदन किया वहाँ मेरा आवेदन चुना गया और मुझे 15 जनवरी 1984 को इसका साक्षात्कार पत्र प्राप्त हुआ; तदनुसार मैं 23 फरवरी 1984 को उपरोक्त स्थान पर साक्षात्कार हेतु गया, अंत में मैं वहाँ चुन लिया गया। फलस्वरूप मैंने 23 जुलाई 1984 को यहाँ पदभार ग्रहण कर लिया।

किरन्दुल स्थान, रायपुर (छत्तीसगढ राज्य की राजधानी) से 540 कि.मी. दूर दक्षिण दिशा में स्थित है। यह दूरस्थ स्थान शहर के भागमभाग शोरगुल से दूर, शांत, प्रदूषण से रहित, हरी भरी वादियों, बैलाडिला की पर्वत श्रंखलाओं और चार राज्यों आंध्र प्रदेश, उडीसा, महाराष्ट्र, तेलंगाना की सीमाओं से घिरा हुआ है। बैलाडिला की ये पहाडियाँ लौह अयस्क से समृद्ध, बाँसों, शाँल, सागौन, शीशम, सोमबृक्ष (सल्फी) के घने जंगलों से परिपूर्ण है। प्रसिद्ध कुटुमसर और कैलाश गुफाएँ,

चित्रकोट और तीरथगढ जलप्रपात यहाँ से 150 कि.मी. के दायरे के भीतर हैं। किरंदुल से विशाखापटनम के 640 कि.मी. विद्युतीकृत ब्रॉडगेज रेलखण्ड के रास्ते में 71 सुरंगें और विश्व प्रसिद्ध बोर्रा पहाडियों की गुफाएं (बोर्रागुहालु, आँध्र प्रदेश) आती हैं। यह स्थान विशेष वन बनस्पतियों और जीव जन्तुओं से घिरे होने के कारण यहाँ के मूल जन जातियों के कुछ विशेष रीति रिवाज हैं, इस कारण से यह क्षेत्र प्राणी, वनस्पति विज्ञान और सामाजिक शास्त्र के लिए शोध का स्थान भी है। उपन्यासकार श्री 'शानी' जी ने अपने दो प्रसिद्ध उपन्यास "शाँल वनों का द्वीप" और "काला जल" में इसी स्थान के बारे मेँ वर्णन किया है। यहाँ के जनजाति सिद्ध् पीठ माँ दंतेश्वरी देवी (कुलदेवी) की अविधि विधान से पूजा करते है और परम्परागत पशु बलि की रस्म अदा करते हैं; यहाँ का विश्वप्रसिद्ध दशहरा भी आदिवासियों के कुल देवी के डोली और रथयात्रा पर मनाया जाता है जो भादौ मास से क्वार मास के विजयदशमी तक (लगभग 50 दिनों तक) चलता है। प्राचीनकाल में इनके पूर्वज देवी को प्रसन्न करने के लिए नर बलि की रस्म करते थे; इनकी स्थानीय बोली हल्बी और गोंण्डी है। ये लोग बिना किसी नियमित गणित विषय की शिक्षा के गणना करने में समद्ध जोड, घटाना, गुणा और भाग की विधि अपनाते हैं जो एक शोध का विषय है। मैंने दिसम्बर 2012 में "राष्ट्रीय गणित दिवस" के अवसर पर राष्ट्रीय शिक्षा एवं

अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली में एक आयोजित सेमिनार में इस विषय की चर्चा भी की थी। ये कुछ विशेष बिमारियों के लिए अज्ञात वनस्पतियों का प्रयोग करते हैं। 70 और 75 वर्ष के बीच के वयस्क अज्ञात वनस्पति का तेल प्रयोग करते हैं जिससे इनके सिर के बाल जल्दी सफेद नहीं होते। इन जनजाति के लोगों का जीवन यहाँ के वनोपज जैसे आम, इमली, बोडा, काजू, चिरौजी, तीखुर (एक प्रकार का गर्मी के दिनों का प्राकतिक शीतल पेय), मसरूम इत्यादि पर निर्भर है।

भगवती माँ दन्तेश्वरी देवी का मन्दिर

किरन्दुल रेलवे स्टेशन

6-गृहस्थ जीवन
(MARITAL Life)

ऐसा कहा जाता है कि विवाह (दो व्यक्तियों/ परिवारों का मिलन) परमपिता परमेश्वर के महा प्रबन्धन और असीम कृपा से सम्पन्न होता है। अतः उसने पुनः अपने भेजे देवदूत आदरणीय श्री शिवशंकर तिवारी जी, के माध्यम से मुझे प्राप्त हुआ। मेरी जीवन शैली में अब धीरे धीरे परिवर्तन आने लगा. परमपिता की महती भगवदकृपा से 19 नवम्बर 1984 को हम, चि. पूनम अग्रवाल के साथ विवाह के पवित्र गठबन्धन में बँध गये। वे पारंपरिक मध्यम हिंदू संस्कृति के उच्च मध्यम वर्ग परिवार की महिला सदस्य थी। उनके पिता श्री श्रीकृष्ण अग्रवाल जी श्रम विभाग, कानपुर, उ.प्र. सरकार में अतिरिक्त श्रमायुक्त के पद पर कार्यरत थे; मुझे खेद है कि मैं इनसे अपेक्षित मान्यता न प्राप्त कर सका। मेरे विचार से उनमें यह बात उपजाति भेद, उनके और मेरे परिवार के बीच, आर्थिक, सामाजिक और रहन-सहन के स्तर में काफी अन्तर होने के प्रभाव के कारण आया होगा। चाहे कुछ भी हो, हमारी सहचारिणी परास्नातक (संस्कृत), संगीतप्रेमी, गायक और हार्मोनियम वादक, सबकी प्रिय परिस्थितियों के अनुरूप ढलने

वाली, स्वभाव में अपनापन, और पूर्ण मनोयोग से भावनात्मक और नैतिक विचार रखने वाली महिला हैं। इन्होंने विवाह के उपरांत वर्ष 1985 में बी.एड. किया; तदनन्तर 19 जुलाई 1986 को एक बालक (चि. नवनीत) को जन्म दिया; बालक के जन्म के पश्चात मैंने ग्वालटोली, कानपुर का किराए का घर छोड दिया।

श्री श्री कृष्ण अग्रवाल, श्वसुर

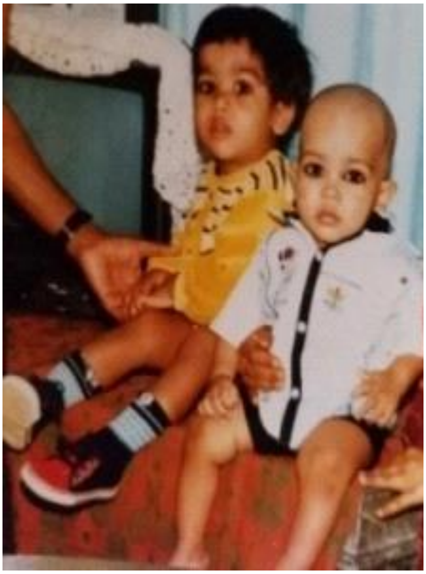

मै और मेरी पत्नी- श्रीमती पूनम गुप्ता

मेरे दोंनो बच्चे- चि. नवनीत एवं चि. राहुल

अब मैं अपने परिवार के 7 सदस्यों के साथ परियोजना द्वारा प्रदत्त दो कमरे के शीट के मकान में माँ, पिता, छोटी बहन, पत्नी और बच्चे (6 सदस्य) के साथ किरन्दुल, दन्तेवाडा, छ.ग. में रहने लगा। वहीं पर लगभग 1 वर्ष 3 माह पश्चात दिनाँक 11 अक्टूबर 1987 को पत्नी ने दूसरे बालक (चि0 राहुल) को जन्म दिया। परिवार में अकेला कमाने वाला व्यक्ति होने के कारण मुझे सभी सदस्यों की जरूरतों को पूर्ति की व्यवस्था करने में बहुत कठिनाई हो रही थी। ऐसे बक्त में परिवार के सभी सदस्यों की आवश्कताओं और अपेक्षाओं के संनुष्टि की व्यवस्था में मेरी पत्नी की भूमिका बहुत अहं थी।

मुझे यह बताने में तनिक भी हिचक नहीं है कि उन्होंने इन सभी बातों को बहुत अच्छे ढंग से निभाया उन्होंने परिवार की महती आवश्यकता को देखते हुए सर्वप्रथम घर पर एक विद्यार्थी को 1 माह के लिए संस्कृत को पढाकर 60 रुपये अर्जित किए। वह मेरी मासिक वेतन को चार भागों (हफ्ते वार) बाँट लेती थी उससे वह परिवार के मूल आवश्यकताओं को प्राथमिकता देती थी और अनावश्यक खर्चे को रोकती थी। एक कहावत है कि हर सफल व्यक्ति के पीछे एक समझदार स्त्री का हाथ होता है, यह हमारे पत्नी का हमारे जीवन पर बिल्कुल सटीक बैठती है। परन्तु हमको कहते हुए दुख लगता है कि लगभग 1 वर्ष के बाद हम लोंगो को छोडकर माँ पिता हमारी छोटी बहन के साथ पुनः कानपुर चले गए और वहीं रहने लगे। कारण कि स्थान बदलने की वजह से उन लोंगो का यहाँ बिल्कुल मन नहीं लगता था। इन परिस्थितियों से विश्रांति पाने, और दोंनो बच्चों के बीच कम अंतर होने और उनका अपर्याप्त पालन पोषण होने के कारण दिल से न चाहते हुए अपने छोटे बेटे को अपने ससुराल में रखना पडा। ससुराल वालों की सहृदयता के कारण चि. राहुल वहाँ लगभग 5 वर्ष रह गया था।

अब इन्होंने 6 जुलाई 1989 को स्थानीय प्रकाश विद्यालय (मिशन स्कूल) में अध्यापिका के रूप में कार्य भार ग्रहण किया। पढाने के अतिरिक्त, वह प्राइमरी में पढ रहे अपने बडे बेटे को प्रतिदिन 2 घंटे पढाया भी करती थी निश्चित रूप से यह मेरे लिए बडा सहारा था। इसी बीच में हमारे श्वसुर जी ने मेरे समक्ष मां पिता के रहने की सुविधा हेतु कल्याणपुर-कानपुर में रहने के लिए मेरी पत्नी के नाम प्लॉट खरीदने का प्रस्ताव रखा उन्होंने हमारी परिस्थितियों को खुले मस्तिष्क से सुलझाया। अंत में उन्होंने प्लॉट को खरीदने में मेरी मदद इस शर्त पर की कि मैं अपनी सुविधानुसार ऋण को हर महीने अदा करने की कोशिश करेंगे. उन्होंने उस प्लॉट पर मेरे अभिभावक के रहने के लिए एक कमरा भी बनवाया। जायदाद की सुरक्षा हेतु वहाँ रहने का निर्णय लेने में मेरी माँ का निर्णय उनके बहुत बडे त्याग को दर्शाता है। वही मैंने किश्तों में ससुर जी को पूरे रुपये लौटाने के 5 साल बाद रजिस्ट्री के कागजात वापस लिए।

अब मेरे ऊपर दोनों तरफ के खर्चो का निर्वहन की जिम्मेदारी आ गई थी। एक तरफ अपने परिवार की (दो बच्चों सहित) पालन पोषण का कर्तव्यवहन और दूसरी तरफ मां पिता के दैनिक आवश्यकताओं के अतिरिक्त छोटी बहन को समुचित

शिक्षा के साधन की व्यवस्था की बाध्यता। इसी बीच मिशन स्कूल में शिक्षकीय सेवा करते हुए 1990 में डी.ए.वी. की नई शैक्षणिक संस्था खुलने के कारण उसमें भी साक्षत्कार दिया अंत में मेरी धर्मपत्नी ने इस नये विद्यालय में संस्कृत शिक्षिका के रूप में कार्य प्रारम्भ किया। मेरी बडी बहन उन दिनों जवाहर नगर-कानपुर में एक किराये के मकान में रहती थीं। मैंने उनको और उनके परिवार के सदस्यों को अपने प्लॉट के आस पास रहने के लिए आग्रह किया ताकि माँ पिता को आवश्यकता पडने पर मदद मिल सके। मेरे कई वर्षों बाद कई बार आग्रह करने के बाद वे पास के किराये के मकान में रहने को राजी हो गए। उनके बच्चे हमारे माँ पिता के साथ अक्सर रहा करते थे उनके पास के स्कूल में पढ्ने हेतु प्रवेश दिला दिया था मै अपने क्षमता के अंतर्गत उन बच्चों की फीस और कापी किताबों की व्यवस्था के लिए हमेशा तैयार रहता था। परन्तु वर्ष 1997 में 3 महीने के बाद वहां छोडकर मां-पिता के साथ हमारे प्लॉट पर रहने लगे। कुछ समय के पश्चात मैंने उनके लिए भी एक आवासीय प्लॉट खरीदने के पीछे लगा रहा अंततः मेरे 40% आर्थिक सहयोग से उन्होंने 900 वर्ग फीट का प्लॉट खरीदा।

7-वर्तमान के विद्यालय में शिक्षक की भूमिका में

(ROLE AS A TEACHER IN PRESENT SCHOOL)

हमारा यह विद्यालय, इस्पात एवं खान मंत्रालय भारत सरकार के आधीन राष्ट्रीय खनिज विकास निगम के प्रबंधन द्वारा कार्मिक विभाग के सामाजिक कल्याण योजना के अंतर्गत संचालित है। मेरे दृष्टिकोण से मेरे पदभार ग्रहण के समय इस कार्य स्थल का वातावरण समुचित शिक्षण के लिए सौहार्द्रपूर्ण नहीं था। वास्तव में यह स्थल राजनीतिक विचार वाले साथियों और विद्यालय के पूरे क्षेत्र में अनुशासनहीनता पैदा करने शामिल तत्वों से युक्त था। पूरा विद्यालय का विद्यालय साधन विहीन शासकीय विद्यालय के जैसा दिखता, स्कूल बिना बाउण्डी वॉल, वीरॉन (बिना पेड पौधे के) प्रॉगण वाला, कमरे टूटे फूटे फर्नीचर, जर्जर वायरिंग, पुराने पंखे एवं अनुपयुक्त साधनों से युक्त थे. विद्यालय का लगभग प्रत्येक बुद्धजीवी सदस्य अपने सुविधापूर्वक ढंग से संचालन की सोच रखता था; अर्थात यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के भविष्य को सही आकार देने के बारे में कोई नहीं सोचता था और न ही इस दिशा में कोई निगरानी ही की जाती थी। विद्यालय का लगभग पूरा स्टॉफ (कुछ को छोडकर) किसी को भी संस्था के प्रसिद्धि के बारे में परवाह नहीं थी. विद्यार्थियों में भी पढाई के बारे में कोई रुचि नहीं दिखाई देती थी दूसरे शब्दों में मैं कह सकता हूँ कि मूल्यों पर आधारित शिक्षा पर किसी प्रकार का प्रोत्साहन नहीं था. फलस्वरूप बोर्ड परीक्षा परिणाम भी अच्छा नहीं आता था। इसी कारण से स्कूल प्रबंधन

भी विद्यालय के कल्याण के बारे में भी नहीं सोचता था, वे इस विद्यालय को सिरदर्द मानते थे और वे इसे संचालित करने के पक्ष में नहीं थे। उन्होंने इस विद्यालय को बन्द करने के प्रयास भी किए. प्रथम इसको केंदीय विद्यालय (1978) में और दूसरा डी.ए.वी. (1988) संस्था में संविलयन के समय। इन दोंनो विद्यालयों के कारण इस विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या भी वर्ष प्रति वर्ष घटती जा रही थी। इन परिस्थितियों में मैंने स्कूल के अनुशासन और विद्यार्थियों को स्वस्थ शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से दिशा में संबंधित अभिनव कार्य/प्रयोग करने का प्रयास किया।

मेरा निवास

Teachers Colony, (1986-87) DLM Colony,

सर्वप्रथम मैंने अपने क्लास के विद्यार्थियों से स्थानीय उपलब्ध स्रोतों की सहायता से सम्बन्धित विद्यार्थियों के समक्ष साज सज्जा को विकसित करने के लिए मौखिक विचार रखा उन सभी ने इस पर अपनी सहमति भी दे दी। मैंने विज्ञान प्रयोगशालाओं को सुसनज्जित करने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों से विज्ञान और गणित विषयों के

पाठ्यक्रम पर आधारित स्थिर और गतिमान मॉडल विकसित करने के प्रेरित किया। इन सब बातों के पीछे सोच यह थी कि इन सब क्रियाओं के द्वारा वर्तमान में चल रहे परिपाटी में परिवर्तन अवश्य आना चाहिए और भविष्य में यह नई परिपाटी विकसित होकर संबंधित समुदायों के सार्थक विचार विमर्श का सशक्त मंच बन जायेगा। साथ में यह विद्यालय के आगामी सत्रों में अन्य सभी विषयों में भी नई सोच का विकसित मॉड्यूल का आधार भी बनेगा। मेरे वरिष्ठ सहयोगी इस प्रकार के क्रिया कलापों में सहयोग देने के लिए बिल्कुल इच्छुक नहीं थे शायद यह कार्य उन लोंगो के लिए कष्टदायक था इसलिए मुझे इन लोंगो के झूठे अहं भावनाओं और घोर विरोध का सामना करना पडा। विरोध होने के वावजूद भी विद्यालय के लिए पहला मौका था कि प्रशासन के पूर्ण सहयोग से 1986 में विद्यालय में पहली बार सभी विषयों की प्रदर्शिनी आयोजित की गई। इस आयोजन में विद्यार्थी समुदाय और समस्त सहयोगियों ने उत्साहित होकर भाग लिया। अंततः यह कार्यक्रम बहुत प्रशंसनीय और सफल रहा. यह क्षण मुझे और हमारे विद्यालय के लिए बेहद सुखदायक रहा। यह तारतम्य विद्यालय के आगामी कई सत्रों तक जारी रहा अब हमारे विद्यालय के यह प्राचार्य ,वर्ष 1988 में सेवानिवृत्त हो गये।

अब मैं आत्मविश्वास के साथ निगम के द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों जैसे राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित हिंदी कवि सम्मेलन, तकनीकी सेमिनार, सुरक्षा सप्ताह, उत्पादकता सप्ताह, पर्यावरण सप्ताह और सतर्कता सप्ताह के अंतर्गत

आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने लगा और अनेक इनाम भी अर्जित किए।

मैंने अपने विद्यालय के विज्ञान के विद्यार्थियों को अन्वेषी विचार विमर्श के लिए "रमन विज्ञान क्लब" मंच आयोजित करने का विचार रखा। मैंने इस मंच के माध्यम से अपने विज्ञान शिक्षक साथियों के सहयोग से कई आयोजन जैसे विज्ञान क्विज, विज्ञान के विभिन्न विषयों पर आधारित बृत्तचित्र, अतिथि प्रवक्ताओं द्वारा वैज्ञानिक आख्यान, विषयों पर आधारित निबन्ध प्रतियोगिताए, सभा में विद्यार्थियों में भाषण प्रतियोगिता इत्यादि आयोजित किए। इन क्रियाकलापों के द्वारा हम लोंगो ने विद्यार्थियो में हमारे धारणा और रुख मे बदलाव का प्रयास किया और सफल भी हुए। हम और विज्ञान के शिक्षक साथियों ने विद्यार्थियों के बीच अच्छी छवि भी बनाई; प्रतिक्रिया में हम कला संकाय के शिक्षक साथियो के द्वेष के निशाने पर हो गये. ये.अब वे एकजुट होकर हमारे क्लब के कार्यक्रमों को असफल करने का प्रयत्न करने लगे।

अब हमारे नवनियुक्त प्राचार्य भी उन्हीं लोंगों का पक्ष लेने लगे; मै विद्यालय के वातावरण के बदलाव की कोशिश से आंशिक रूप से सन्तुष्ट हुआ। इस समय मैंने अपनी व्यक्तिगत क्षमता से तथाकथित उद्देश्य से विद्यार्थियों का समूह विकसित करने में सीमित कर लिया।

इसी दरम्यान आकाशवाणी केंद्र, जगदलपुर, में मैंने केंद्र निदेशक को अपने उद्देश्य बता कर उनके "छात्रीय कार्यक्रम" और "शिक्षकों के लिए" कार्यक्रमों हेतु शिक्षा प्रशिक्षक के रूप में नामाँकन करवा लिया। मैंने विज्ञान और गणित विषयों के रोचक शीर्षकों तथा अध्यापक शिक्षा पर आधारित पर आलेख लिखने लगा और कार्यक्रम निदेशक से अनुमोदन होने पर बच्चों के साथ रोचक वार्तालाप और आधुनिक शिक्षा दर्शन पर आलेख का आकाशवाणी केंद्र पर ध्वन्यांकन करवाया जो आकाशवाणी केंद्र, जगदलपुर से प्रसारित भी होता रहा। मैं 1988 से 1996 तक इस कार्य में लगा रहा।

8-सामाजिक क्रिया कलाप

(SOCIAL ACTIVITIES)

अब मेरे मस्तिष्क में "अपने चारों ओर स्थानीय आदिवासियों समुदायों के मध्य पनप रहे अज्ञानता और अंधविश्वास को हटाने हेतु विज्ञान का प्रचार प्रसार" का विचार कौंधा और यह विचार एक संस्था "विज्ञान परिषद, प्रयाग, शाखा बैलाडीला" के रूप में अमल में आया। हम लोंगो ने एक कार्यकारिणी समिति माननीय श्री गौरी शंकर पुरोहित, महाप्रबंधक, बैलाडिला लौह अयस्क परियोजना (एन.एम.डी.सी. लिमिटेड, बैलाडिला इकाई) किरन्दुल के संरक्षण में गठित। की इसके अध्यक्ष डाँ.एस.एम.आर. नायडू, तत्कालीन प्राचार्य, अरविंद स्नातक महाविद्यालय, किरन्दुल थे. इस संस्था के सदस्य नगर में विद्यमान विभिन्न स्कूलों के प्राचार्य, परियोजना अस्पताल के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डाँ देश दीपक, शासकीय पशु चिकित्सक डाँ एस.एन.पाँण्डेय, वन विभाग के अधिकारी और विभिन्न शासकीय संस्थाओं के विद्यार्थी, कर्मचारी, इंजीनियर, चिकित्सक और अधिकारी गण थे।

अभियंता दिवस पर संरक्षक श्री पुरोहित, महाप्रबंधक, भाषण देते हुए

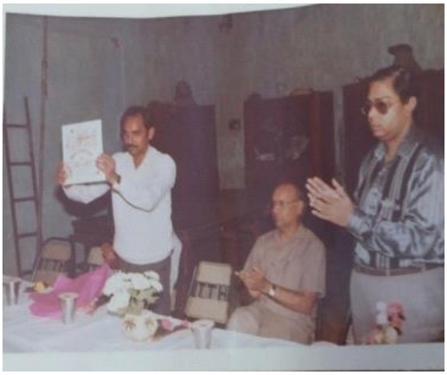

"जिज्ञासा" पत्रिका का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि

परोक्ष रूप से इस प्रकार बाहरी संम्भ्रांत व्यक्तियों के समर्थन ने मुझको एक तरह से स्थानीय समुदाय के लोंगों के जीवन स्तर को उठाने का स्वर्णिम अवसर की ओर बढने का साहस प्रदान किया। संस्था के सचिव होने के नाते मैंने अनेकों सामुदायिक कार्यक्रम, जैसे शासकीय वन विभाग, मध्य प्रदेश शासन द्वारा प्रायोजित वन्य जीव संरक्षण सप्ताह, राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम, राष्ट्रीय अभियंता दिवस, पर्यावरण संरक्षण सप्ताह, राष्ट्रीय गणित दिवस, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, कवि सम्मेलन, शिक्षक दिवस, भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा प्रायोजित अंतर्विद्यालयीन विज्ञान क्विज प्रतियोगिता, परियोजना प्रबंधन द्वारा प्रायोजित सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन पर आधारित निबन्ध प्रतियोगिता आदि सम्पन्न किए. राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर पत्रिका "जिज्ञासा" के विमोचन मे साथ परिषद के सत्र का समापन हुआ।

दूसरी ओर प्रतिरोधी शक्तियों के प्रक्रिया के तहत मेरे और मेरे शिक्षक साथियों के संग नये प्राचार्य श्री रमेश चन्द्र त्रिवेदी के बीच गहरा मतभेद और विरोध हुआ। वे बुरी तरह से अप्रसन्न हो गये और वे हमारी दैनिक शिक्षा, शिक्षण विधि और उससे सम्बन्धित अन्य क्रिया कलापों मे दोष खोजने लगे। वे मेरा ताबडतोड स्थानांतरण विद्यालय के एक शाखा से दूसरी शाखाओं में करने लगे इस कार्यवाही करने के पीछे उनका उद्देश्य परिषद की अबाध रूप से चल रहे कार्यक्रमों में अडंगा डालना था। उन्होंने मुझे छोडकर शेष सभी शिक्षक साथियों के सहयोग से एक अन्य संस्था "विरासत (हेरिटेज इण्डिया) की स्थापना की। अब प्राचार्य अपने समर्थित शिक्षक साथियों के साथ अपनी संस्था के कार्यक्रमों को पूरे जोर शोर और तन मन से आगे बढाते रहे और परियोजना विद्यालय की प्रतिष्ठा का शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढाने के उद्देश्य से विचलित हो गये; परिणामस्वरूप आगामी कई शिक्षा सत्रों में विद्यालय का शैक्षणिक स्तर गिरता गया और बोर्ड के वार्षिक परिणाम निचले स्तर पर आ गया। परियोजना प्रबंधन ने प्राचार्य और समर्थित शिक्षकों के विरूद्ध शिक्षा संम्बधित गतिविधियों में भ्रष्टाचार के कई मामलों में संलिप्तता की जाँच पडताल की और उसको सही पाये जाने के कारण वर्ष 1996 में प्राचार्य को सेवा से निष्कासित कर दिया और कई शिक्षकों को भी दंडित भी किया अंततः उनकी संस्था की सभी गतिविधियाँ पूरी तरह से बंद हो गई।

9-पूज्य पिता जी का देहावसान
(SAD DEMISE OF MY FATHER)

अब मैं भविष्य में अपने पदोन्नति की पात्रता हेतु सम्बन्धित विषय की स्नातकोत्तर उपाधि (एम.एस.सी. गणित) प्राप्त करने हेतु अपने अध्ययन पर और बेटे की अध्ययन दिनचर्या और घर पर उसकी विषयों की उपयुक्त शिक्षण पर अपना ध्यान केंद्रित करने लगा। मुख्य रूप से उसके मिडिल कक्षाओं और माध्यमिक कक्षाओं के विभिन्न विषयों के होम वर्क को पूरा करवाने और विज्ञान और गणित आदि विषयों की समुचित शिक्षा पर अपना समय देने लगा। अंततः मैंने वर्ष 1996 में एम.एस.सी. (गणित) की अंतिम परीक्षा पं. रवि शंकर शुक्ला, रायपुर विश्वविद्यालय (म.प्र.) से उत्तीर्ण कर ली। इस समय मेरे माँ-पिता जी मेरी सबसे छोटी बहन के साथ मेरे आवासीय प्लॉट, कल्यानपुर पर रहने लगे। मेरी दूसरी बहन भी अपने पति और बच्चों के साथ उसी प्लॉट पर भी रहने लगे इस प्रकार वे एक दूसरे का देखभाल और सहयोग भी कर रहे थे; इसलिए मैं अपने अभिभावक के प्रतिदिन की दिनचर्या की घटनाओं से चिन्तामुक्त भी था। इसी बीच मैं मूलभूत कम्पूटर तकनीकी और उसकी भाषा को सीखने के उद्देश्य से मैंने जून 1996 में इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से बैचलर ऑफ कम्प्यूटर

एप्लिकेशन्स (बी.सी.ए.) के पाठ्यक्रम में दाखिला लिया। मैंने इस पाठ्यक्रम के चार सेमेस्टर भी उत्तीर्ण कर लिए.पाँचवे सेमेस्टर की परीक्षा देने के लिए मैं अकेला किरन्दुल-दन्तेवाडा ही रुका हुआ था मेरी पत्नी और दोंनो बच्चे ग्रीष्मावकाश के कारण हमारे पैतृक निवास कानपुर (उ.प्र.) चले गए थे तभी 9 मई 1998 को पिता जी के देहांत का समाचार मिला, इस दुखद समाचार को सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। मैंने तुरन्त ही परीक्षा देने का विचार छोडकर अपने गृहप्रदेश कानपुर रवाना हो गया। अत्यधिक दूरी होने के कारण यह मेरे लिए बहुत ही दुखते दिल पर पत्थर रखने के समान हो गया कि मैं उनके अंतिम दर्शन भी न कर सका। वे, मेरी माँ, छोटी अनव्याही बहन के साथ मुझको छोडकर चले गये। मेरी छोटी बहन चि. गायत्री वर्ष 2001 में कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर (उ.प्र.) से कला के विषयों के सहित स्नातक हो गई थी। अब वह निवास स्थान के आस-पास (कानपुर में) किसी प्राइवेट स्कूल मे शिक्षिका के रूप में पढाने लगी थी। मैंने उसके विवाह के लिए विभिन्न माध्यमों का सहारा लिया। अनेक वर्षों तक दौड धूप करने के बाद सुल्तानपुर (उ.प्र.) जिले में एक व्यापारिक घराने में उसका विवाह तय हो गया. दुर्भाग्यवश अप्रत्याशित घटना वश मैं एक स्कूटर से दुर्घटनाग्रस्त हो गया और मेरे दोनों हाथों की नसों में गम्भीर खिंचाव और दाहिने पैर की

एडी में हड्डी भी टूट गई; फिर भी उसकी शादी दिसम्बर 2002 में हो गई।

छोटी बहन का तिलक समारोह

10- **परमपूज्य ममतामयी माता जी का देहावसान**

(SAD DEMISE OF MY BELOVED MOTHER)

छोटी बहन के विवाह के उपरांत मैंने माँ से किरन्दुल में मेरे पास रहने का प्रस्ताव रखा लेकिन उन्होंने अब मेरे साथ रहने के लिए पूर्ण रूप से इंकार कर दिया। मैं उनके इस रुख से बहुत दुखी हुआ अंत में वे वहीं (कानपुर में) रहने लगीं और 13 अक्टूबर 2003 को वही अपनी अंतिम साँस ली। इस तरह मेरे जीवन में, मेरी प्यारी माँ की जीवनलीला का अध्याय हमेशा के लिए समाप्त हो गया. उनके अभाव से मेरे जीवन में एक सूनापन आ गया जिसे कभी भी भरा न सकेगा। मुझे यह कहते हुए बडा दुःख होता है कि माँ के मृत्यु के पश्चात मेरी छोटी बहन गायत्री ने कभी अकारण भी पीछे मुडकर भी मुझे देखने की जरूरत नहीं समझी। मैं यह नहीं समझ सका कि क्यों और कैसे उसके रुख में इतना बदलाव आया जबकी मैंने हर क्षण उसके बेहतर भविष्य के लिए पूरी दिलोदिमाग से समर्पण भाव से कार्य किया. मैंने तो अपनी क्षमता से अधिक उसके वैवाहिक समारोह में उत्साह पूर्वक कर्तव्य का निर्वहन किया. इतना ही नहीं मैंने उसको केवल जन्म नहीं दिया, शेष सभी तरह से स्वस्थ पालन पोषण और पढाई के अवसर दिए, शायद परमपिता ईश्वर ने मुझे अपने जीवन में इस प्रकार के कार्य को भी सम्पन्न करने की जिम्मेदारी निर्धारित की थी।

11-मेरे जीवन रूपी सीप के स्वप्नों का मुँह खुलना
(OPENING OF OYESTER)

अब मैं पूर्वजों और सामाजिक महानुभावों के आशीर्वाद स्वरूप प्राप्त परिवार के सदस्यों से पूरी तरह से संतुष्ट था। मुझे सर्वशक्तिमान ईश्वर के वरदानस्वरूप प्राप्त अपने दो पुत्र रत्नों पर गर्व है। मैंने दोंनो के लिए केंदीय सेकेण्डरी स्कूल (10वीं), नई दिल्ली की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद सत्र के गर्मी के छुट्टियों में 11वीं और 12वीं कक्षाओं के लिए विषयों (भौतिकी, रसायन शास्त्र, गणित) के अल्पकालिक विशेष कोचिंग और क्रैश कोर्स, काकादेव, कानपुर (उ.प्र.) ज्वाइन करवाने का निश्चय किया ताकि स्कूल के पाठ्यक्रम सत्रों में सम्बन्धित विषयों के अध्ययन में कोई परेशानी का सामना न करना पडे। इस विशेष मार्गदर्शन के मिलने का परिणाम यह रहा कि ज्येष्ठ पुत्र मा. नवनीत ने केंद्रीय बोर्ड, वर्ष 2004, नई दिल्ली की परीक्षा में 76.4% अंक प्राप्त करके अपने केंद्रीय विद्यालय, किरन्दुल के 12वीं कक्षा में तृतीय स्थान प्राप्त किया और गणित, भौतिकी, हिंदी में सर्वोच्च अंक प्राप्त किए और रसायन शास्त्र में दूसरा स्थान प्राप्त किया। इसी बीच मैंने इंडियन काँउंसिल आँफ हिस्ट्री आँफ मैथमेटिक्स, नई दिल्ली और एसोसिएशन आँफ मैथमेटिक्स टीचर आंफ इण्डिया, चेन्नई संस्थाओं मे आजीवन सदस्यता ले ली। मैंने इन मंचों के माध्यम से गणित विषय के विभिन्न प्रमेयों पर पत्र प्रस्तुत

किए। मैं अपने छोटे बेटे राहुल को उसकी उपलब्धता के अनुसार उसकी आगामी भविष्य के संवर्धन के लिए ले जाया करता था। मेरे जीवन का सबसे प्रतिष्ठित और सुनहरा अवसर जी.बी. पन्त कृषि विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड में अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में गणित विषय के शीर्षक "गणितज्ञ फर्मा और उनका अंतिम प्रमेय" पर पत्र प्रस्तुत करना रहा। इसके बाद मैंने अन्य पत्र मणिपुर विश्वविद्यालय, इम्फाल, दिल्ली विश्वविद्यालय, साउथ कैम्पस और राष्ट्रीय गणित दिवस के अवसर पर (22 दिसम्बर 2012) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्लीमें भी प्रस्तुत किए ।

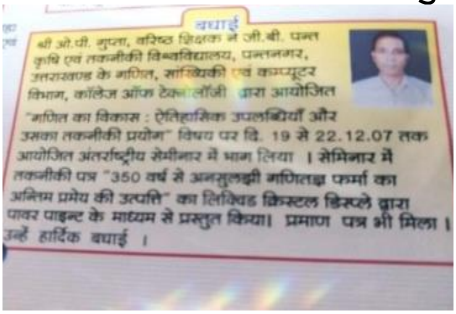

बधाई

श्री ओ.पी. गुप्ता, वरिष्ठ शिक्षक ने जी.बी. पन्त कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, पन्तनगर, उत्तराखण्ड के गणित, सांख्यिकी एवं कम्प्यूटर विभाग, कॉलेज ऑफ टेक्नालॉजी द्वारा आयोजित "गणित का विकास : ऐतिहासिक उपलब्धियाँ और उसका तकनीकी प्रयोग" विषय पर दि. 19 से 22.12.07 तक आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार में भाग लिया । सेमिनार में तकनीकी पत्र "350 वर्ष से अनसुलझी गणितज्ञ फर्मा का अन्तिम प्रमेय की उत्पत्ति" का लिक्विड क्रिस्टल डिस्प्ले द्वारा पावर पाइन्ट के माध्यम से प्रस्तुत किया। प्रमाण पत्र भी मिला । उन्हें हार्दिक बधाई ।

एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली में आलेख प्रस्तुत करते हुए

इसके अतिरिक्त मैंने राष्ट्रीय विज्ञान एवं तकनीकी संचार परिषद, भारत सरकार, नई दिल्ली के सौजन्य से "औरिगैमी (कागज मोडने की एक कला)" के माध्यम से गणित शिक्षण की नई तकनीक की कार्यशाला उडीसा राज्य के मयूरभंज और गुजरात राज्य के भावनगर जिले में शामिल होकर प्रशिक्षण प्राप्त किया। तत्पश्चात प्रशिक्षक के तौर पर डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, प्रकाश विद्यालय, किरन्दुल और

जवाहर नवोदय विद्यालय, बारसूर, दन्तेवाडा (छत्तीसगढ) में" कागज मोडने की कला (औरिगैमी) के माध्यम से गणित सीखना" कार्यशाला आयोजित किया।

श्री रवींद्र केशकर भावनगर, गुजरात

प्रतिभागी के रूप में (औरिगैमी)

प्रशिक्षक के रूप में (गणित शिक्षण)

जे.एन.वी.,बारसूर, बारसूर, दन्तेवाडा (छ.ग.)

अब हमारे बडे बेटे मा.नवनीत गुप्ता ने वर्ष 2004 में रायपुर विश्वविद्यालय, रायपुर, छ.ग. के अंतर्गत सी. एस. आई. टी. कॉलेज, दुर्ग में बी. ई. (इलेक्ट्रॉनिक एवं टेलीकम्युनिकेशन्स ब्रांच) मे प्रवेश लिया। इसी बीच सितम्बर 2005 में हमारा स्थानांतरण स्कूल से प्रशासनिक भवन मेँ "विद्युत सेवा विभाग" में "कार्यपालन कार्मिक सचिव" के रूप स्थानांतरण हो गया। यह कार्य हमारे लिए बिल्कुल नया था परन्तु मैंने नए शिक्षार्थी के रूप में इस कार्य को चुनौती के रूप में स्वीकार किया। मैंने इस कार्य को सीखने और सफलता पूर्वक सम्पन्न करने हेतु अपने ऑफिस के कार्य के घंटे से अधिक काम किया कभी कभी मैंने रात को 9:00 बजे काम किया और कभी कभी घर लाकर काम पूरा किया। मैंने काम सीखने के लिए जी तोड मेहनत किया पर मैंने ऑफिस के हर कार्य को समय सीमा के अंदर पूरा किया. मा.नवनीत ने वर्ष 2008 में बी.ई. रायपुर, 2009 में पी.जी. डिप्लोमा (वी.एस.एल.आई. एवं इम्बेडेड सिस्टम) सी.डैक, नोएडा और 2011 में एम.टैक. (कम्युनिकेशन्स), वी.आइ.टी., वैल्लोर, तमिलनाडू से डिग्री प्राप्त की।

वी.आई.टी. वैल्लोर के छात्रावास में

एम.टेक के दीक्षांत समारोह के पूर्व

12- आदर्श शिक्षक एवं अभिभावक के रूप में प्रतिस्थापन (ESTABLISHMENT AS A MODEL TEACHER AS WELL AS PARENTS)

हमारे छोटे पुत्र मा.राहुल गुप्ता ने केंद्रीय विद्यालय, अर्मापुर, कानपुर (उ.प्र.) से वर्ष 2005 में उत्तीर्ण करने के पश्चात आई. आई. टी. के जे. ई. ई. प्रतियोगिता हेतु विशाखापट्नम (आ.प्र.) में नारायणा इंस्टीट्यूट ऑफ आई. आई. टी. एकेडमी में दाखिला लिया और प्रतियोगिता वर्ष 2006 में अखिल भारतीय रैंक 648 प्राप्त किया. परिणामस्वरूप उसने आई. आई. टी., खडगपुर (प.बं.) से बी.टेक. (विद्युत अभियांत्रिकी) वर्ष 2010 में पूर्ण किया। तदनन्तर उसको पी.एच.डी. (विद्युत अभियांत्रिकी) वर्ष 2015 में युनिवर्सिटी ऑफ सदर्न कैलीफोर्निया,यू.एस.ए. से प्रदान किया गया।

पी.एच.डी. के दीक्षांत समारोह डॉ. राहुल गुप्ता के क्षण (विशेष वेशभूषा में)

छोटे पुत्र के इस उपलब्धि ने मेरे प्रतिष्ठा में न केवल बडी बढोत्तरी ही की बल्कि मुझे आदर्श शिक्षक और अभिभावक के रूप में प्रतिस्थापित कर दिया. केंद्रीय विद्यालय, किरन्दुल के तत्कालीन प्राचार्य ने मुझे निमन्त्रित किया और मुझसे कहा कि हमारे 11वी और 12वी स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों को सफलता के कुछ गुर बतायें।

अब परियोजना प्रबंधन के बिचार में भी परिवर्तन आया और उन्होंने भी मुझे आदर्श शिक्षक के रूप में मान्यता देना शुरू कर दिया; उन्होंने मेरे स्कूल वापस जाने को मना करने के बावजूद वहाँ इस शर्त पर अनुसंशा करके भेजा कि मि. गुप्ता को बच्चों के भविष्य सुधार हेतु उपयुक्त कार्यभार प्रदान किया जाए। उन्होंने विद्यालय के प्राचार्य को बाध्य किया कि मि. गुप्ता को 11वी और 12वी कक्षा में गणित विषय अध्यापन दिया जाय।

निगम प्रबंधन के सेवा शर्तों के अनुसार विशेष भत्ते की प्राप्ति के लिए मैंने वर्ष 2010 में बस्तर विश्वविद्यालय, जगदलपुर से समाजशास्त्र विषय से एम.ए. की उपाधि ली तदनुसार भत्ता प्राप्त किया, इसी दरम्यान मई 2010 में मुझे अपने बडे बहनोई के दुखद मृत्यु का समाचार भी प्राप्त हुआ. उन्होंने अपने पीछे अपनी पत्नी, 30 वर्षीया पुत्री और 24 वर्षीय पुत्र को छोड गए। अब मुझे अपनी बहन, और उनके बच्चों को नैतिक सहारा और आर्थिक सहयोग प्रदान करना

मेरा पहला कर्तव्य हो गया। मैंने बहन को बच्चों के साथ अपनी स्वतंत्र इच्छानुसार हमारे बनाए निवास पर भविष्य में भी रहने के लिए अनुमति दे दी. मैंने नैतिकतावश उनके पुत्र के लिए अनेंको बार किसी प्राइवेट फर्म में नौकरी की सिफारिश भी की.वह वर्ष 2012 से लोहिया मशीन्स लिमिटेड, कानपुर में टेक्निकल आँपरेटर के रूप में कार्य कर रहा है। समय के प्रवाह में अब स्थितियाँ बदल गई हैं. महसूस होता है कि उनमें अपनेपन की कमी आ गई है. अब वे लोग अपने भविष्य जीवन के बारे में स्वतन्त्र रूप से सोचने लगे हैं। खैर ये उन लोंगो का मौलिक अधिकार है; अब मुझे लगता है कि वे नहीं चाहते कि उनके निजी जीवन में मैं हस्तक्षेप करूँ.।

वर्ष 2012 में मेरे बडे पुत्र ने साँफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में आई. गेट (पाटनी), नवी मुम्बई, महाराष्ट्र में अपने सेवा की शुरुआत की; वहीं छोटे पुत्र ने वर्ष 2016 को अमेजाँन कम्पनी, बाँस्टन, उत्तरी अमेरिका में रिसर्च सांइटिस्ट के रूप में व्यवसाय की शुरुआत की।

13- परिवारिक सीप में मौक्तिक स्वरुप का रूपांतरण

(TRANSFORMING TO PEARL)

अब परम सहृदयी, सच्चिदानन्दस्वरूप के उदार प्रबंध के वजह से समाज में मुझे अपने दोंनो उत्कर्ष पुत्र रत्नों के कारण भाग्यवान पिता के रूप में मान्यता मिल गया। परमपिता परमेश्वर के द्‌वारा प्रदाय यह अपार बरदान का, मैं इस सीमित जीवन में प्राप्त चन्द साँसों के माध्यम से कृतज्ञता ज्ञापन से कभी भी पूरा नहीं कर सकता। अब दोनों पुत्रों के विवाह के लिए पहल करने का समय आ गया था। विभिन्न संचार माध्यमों की सहायता से मैंने इन लोंगों के लिए उपयुक्त रिश्ते खोज कर लिए थे। इस समय मेरी बडी पुत्र बधु बनारस जिले के संभ्रात डाँक्टर परिवार की बेटी हैं; और छोटी पुत्रबधु इलाहाबाद जिले के प्रतिष्ठित व्यापारी की बेटी हैं। मैं अब परिवार के प्रतिष्ठित सदस्यों से युक्त सीप का एक मोती बन गया. बस अब स्वाभाविक रूप से निर्मित मोती को जौहरी द्‌वारा दीप्तिमान करने की दरकार है।

इस प्रकार मैं अपने परिवार की सामाजिक जिम्मेदारी को पूरा करने के बाद 31 जनवरी 2015 को व्याख्याता (गणित) के सेवा से अवकाश प्राप्त हो गया. इस समय परमेश्वर की असीम अनुकम्पा से शारीरिक और मानसिक रूप

से स्वस्थ और अपनी वर्तमान स्थिति से पूर्ण रूप से संतुष्ट हूँ।

बनारस में समधी डॉ0 के.सी. गुप्ता जी

इलाहाबाद में समधी श्री दिनेश अग्रवाल जी

चि0 राहुल एवं चि0तरुणा

न्यूयार्क में

"हमारा परिवार"

14-साकार होता सुनहरा सपना
(SHAPING OF A GOLDEN DREAM)

अब तो बडे ही आनन्द का प्रसंग आ ही गया जिसका हम सभी उस क्षण का इंतजार कर रहे थे, जैसा कि ऊपर वर्णित किया है। आखिरकार प्रकृति रूपी जौहरी ने हमारे अरमानों की मोती में चमक सुपौत्र "रियान" के रूप में ला ही दिया। हमारी ईश्वर से तन, मन और बुद्धि से बिनती है कि हमारे अरमानों की इस मोती में यह चमक बरकरार रखने के साथ साथ उत्तरोत्तर बृद्धि करता रहे। यह मेरी जीवन यात्रा तब तक चलती रहेगी, जब तक यह क्षणिक जीवन है; इसका कोई ठिकाना नहीं, बाकी का काम मैं अपने भावी पीढियों पर छोडना चाहूँगा।

चिरन्जीव रियान गुप्ता (सुपौत्र)

15- क्षणिक जीवन के अनुभव के कुछ शब्द

(LITTLE WORD OF EXPERIENCE OF MORTAL LIFE)

हमारे विचार के अनुसार सभी दृष्टिकोंणो से समग्र संसार को जानने का क्षेत्र अथाह और अपार है और मनुष्य का जीवन इसकी तुलना में अल्प है, मनीषियों ने इस संसार को अपने अपने दृष्टिकोणो और दर्शन से इसकी सीमित रूप से व्याख्या की है. वास्तव में किसी व्यकित का अनुभव उसके सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों के पारस्परिक विचारों के आदान प्रदान और परिस्थितिजन्य आधारभूत ढाँचों के प्रतिक्रियाओं से प्राप्त होती हैं. हैं. अतः यह कहना असम्भव है कि विशेष व्यक्ति के जीवन का अनुभव और उसके उदगार वैश्विक रूप से सटीक होगा. यह तो अपने अपने व्यतीत जीवन शैली को स्वतः के निहित दृष्टिकोण पर तय होता है. अतः यह बहुत कुछ सम्भव है किसी के जीवन में सुखद क्षण प्राप्त करने का तरीका दूसरे के लिए विपरीत हो.

इस विधा के माध्यम से मैंने अपने जीवन के कुछ अल्प अनुभव साझा करने की कोशिश नीचे की पंक्तियों में किया है.

सर्वप्रथम मैं कहना चाहता हूँ कि किसी के व्यक्तित्व का विकास उस सम्बन्धित व्यक्ति का अपने जीवन और जीने की ढंग के प्रति मनोभाव (नजरिया) पर निर्भर करता है. यह

प्रवृति पहले ईश्वर या प्रकृति और बाद में सामान्यतया माँ या पर्यावरण द्वारा निर्धारण होती है.

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व पर, उसके बचपन में उसके माता पिता की व्याहारिक क्रियाएँ और आस पास का वातावरण प्रभाव डालते हैं इस बात को कहने में कोई शंका नहीं है कि सम्बन्धित व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवनवृति की दिशा बदलने में एक व्यक्ति ही काफी हो जाता है. अतः अभिभावकों को अपने बच्चों के स्वस्थ और सुखद भविष्य के निर्माण मे सदैव सजग और पारदर्शी होना आवश्यक है.

एक बात और जब कोई व्यक्ति किसी अनजान कार्य क्षेत्र में प्रवेश करता है तो सम्बन्धित व्यक्तियों का समाज ही संलग्न कार्य सम्पन्न करने की दिशा का निर्धारण करते हैं.ये व्यक्ति अपने जीवन के ध्येय को अलग अलग तरीकों से प्राप्त करने का प्रयास करते है.

अंत में एक बात जो मैंने जीवन के धरातल पर अनुभव की, वह जीवन की कडवी सच्चाई उसकी मजबूरी होती है, पेट की भूख एक ऐसी आग होती है जो अच्छे अच्छे व्यक्तियों को झुका देती है, जिनको यह समझ में नहीं आता उसे वक्त समझा देता है।

****

जीवन : एक सरिता

ये,

जाने,

अजाने,

शान्ति में,

विश्रांति में,

क्युँ मन ही मन,

चला करता है मंथन,

कुछ विचारों को बुनता,

कभी-कभी फिर सोचता ,

आखिर यह जीवन क्या है,

इसमें फिर छिपा क्या वाकया है,

हमें लगा, नियति से मिला वरदान है,

आत्मा है, परमात्मा का भी अहसान है,

फिर लगा ये तो उमडती नदी के समान है,

तटें तोड देती,जब ये बहती जल प्रलय समान है,

फिर भी अलग रूह के नदियों के संगम में जंगम है,

दोनों के अलग सुर हैं, पर इनके साधना में संयम है,

गर इनमें सह अस्तित्व की भावना है तो जीवन है,
इनके अविरल प्रवाह में सरसता का संजीवन है
नियति ने हमें बिना मोल हवा प्रकाश दिया है,
क्यूँ हमनें विष बो इसका उपहास किया है,
यूँ तो हर के जीवन में अपनी एक नदी है,
पर सजने संवरने में,लगती कई सदी है,
बाधा मत हो,बुलबुल के मचलने में,
दुख होता, खिले फूल मसलने में,
यह जीवन बहुत सरल,तरल है,
जीवन में क्यूॅ पाले, गरल है,
ये जीवन होता, जटिल है,
राह हो जाते कुटिल है,
सदा सद जन रहें ,
सद भाव भरें,
हर्षित रहें,
शांति में,
अजाने,
जाने,
ये।

जीवन जीना- एक कला

किसी मनुष्य का जीवन एक ऐसी यात्रा है, जो उसके जन्म से प्रारम्भ होकर मृत्यु पर समाप्त होती है।इस जीवनकाल का प्रत्येक क्षण अनिश्चितताओं, घटनाओं और दुर्घटनाओं से भरा होता है। एक निश्चित पल की घटना व्यक्ति के परिस्थिति को अकस्मात बदल देती है,जिसका अंदाज लगाना बहुत कठिन है। हाँ, किसी व्यक्ति के जिन्दगी में उसके परिवार से प्राप्त विरासत की भूमिका अहं होती है, परन्तु उसका जीवन दर्शन बिल्कुल नहीं हो सकती। जीवन जीने का नजरिया बहुत कुछ उसके दिमाग में उपजे विचार पर निर्भर करता है। थाती के रूप में मिले विचार व वस्तुएं एक सीमा तक ही संबन्धित व्यक्ति को प्रभावित कर पाती है, ऐसा मेरा मानना है।

मनुष्य का जीवन सीमित पर आकांक्षाएं अपार है। जीवन के पन्नों पर अपार इच्छाओं के चित्र उसमें विचार और दर्शन के ऐसे रंग उकेरना, जिससे वह आकर्षक और प्रेरक बन सके; यह एक कला ही कर सकती है। कला की विशेषता इस बात पर आधारित है कि मनुष्य अपनी किन इच्छाओं को अहं, अधिक या बहुत कम महत्व देता है। एक व्यक्ति के लिए सभी इच्छाओं को समान अहमियत देना या बिल्कुल न देना असम्भव है। इनका चुनाव करना पूर्ण रूप से प्रकृति या

सर्वशक्तिमान ईश्वर की गूढ प्रेरक शक्ति पर आश्रित है। हमारे विचार से जो कर्म हमारी क्षमता के अधीन है, उस पर पूर्ण रूप से सक्रिय होना चाहिए। भगवान भरोसे निष्क्रिय होकर बैठना अनुचित है। बृहद विचार के इस क्षेत्र में हमारा यह विचार बिल्कुल सीमित लगता होगा।

अन्त में हम यह कहना चाहते हैं कि किसी व्यक्ति के जीने का सिद्धान्त कुछ भी हो, पर अपने जीवन रूपी किताब में अपने गुण और कार्यक्षमता से ऐसी कला का भाव भरना चाहिए जो विश्व, राष्ट्र, समाज या परिवार का उदाहरण होना चाहिए। यह अन्य लोगों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने में प्रेरक का काम करे।

ओमप्रकाश गुप्ता

दिवा स्वप्न

गाँव के प्रधान अन्तूराम के यहाँ राजू नाम का नौकर था, वह प्रधान के घर का लगभग सभी काम करता था। राजू का 14 वर्ष का एक बेटा लच्छू था। राजू अपने बेटे को अक्सर प्रधान के घर ले जाता था। लच्छू, प्रधान के घर में उसके शान शौकत को देखता रहता था।घर में चार नौकर थे, कोई बाजार का काम करता तो कोई खेती कास्तकारी का। पूरे घर पर प्रधान का रुतबा था। लच्छू भी सोचता, काश हमारे पास भी खूब धन होता तो हमारी साख बढ जाए।

एक बार प्रधान ने लच्छू से गन्ने से भरे रस का मटका बाजार से घर लाने को कहा, आदेश पाकर लच्छू बाजार से, रस से मटके को सिर पर रख कर घर की ओर चला। रास्ते में वह सोचने लगा कि इस काम से मिले पैसे से अंडे खरीदूँगा, रोज उसकी खरीद विक्री करके व्यापार करूँगा, इसी के सहारे दूसरा इससे बडा व्यापार खडा करूँगा, जब खूब पैसा हो जायगा तो घर खरीदूँगा इसके बाद शादी करूँगा फिर बच्चे होंगे, पूरे घर में मेरा रुतबा हो जाएगा। सब पर अपना रौब झाड़ूँगा, बच्चे जब बोलेंगे, पापा! चलो खाना खा लो, तो उनसे भी रुआब झाडते हुए बोलूंगा, जा भग, अभी खाना नही खाता, नहीं खाता ...

यह कहते हुए चलते चलते रास्ते में लच्छू अपनी सिर को झटकने लगा। तभी रस से भरा मटका सिर से खिसकने लगा

और असंतुलित होकर जमीन पर गिरकर फूट गया। वह उदास होकर घर पहुंचा, तो प्रधान और पिता राजू उसको डांटने लगे और कहने लगे कि तुमने हमारा सब नष्ट कर दिया।

लच्छू बोला कि आपका तो केवल रस से भरा घडा ही फूटा, पर मेरा सब कुछ सत्यानाश हो गया। मेरी सारी योजनाओं पर पानी फिर गया।

हमको इस कथा से यह सीख लेनी चाहिए कि हमे लच्छू की तरह दिवा स्वप्न नहीं देखना चाहिए। सारे टीनेजर्स को स्वप्न जरूर देखने चाहिए, पर हकीकत और क्षमता के अनुसार। नहीँ तो लच्छू की तरह हश्र होता है और हॅसी का पात्र भी।

ओमप्रकाश गुप्ता बैलाडिला

सपने वो, जो चैन की नींद सोने न दे

मनुष्य का चिन्तन और उसकी दैनिक गतिविधियाँ उसके मस्तिष्क और मन पर स्थाई और और अस्थाई दोनों प्रकार से प्रभाव डालती है। वास्तव में मनुष्य के भीतर दो प्रकार का मन होता है, जागृत अवस्था में वहिर्मन सक्रिय रहता है और सुसुप्तावस्था में अन्तर्मन। वहिर्जगत में हम अपने और मस्तिष्क को सक्रिय रखकर जो भी कार्य अपने निर्मित वातावरण में करते हैं, वही अन्तर्मन सुसुप्तावस्था में स्वप्न बनकर निर्मित होता है। हमारे महान संत श्री गोस्वामी तुलसी दास जी द्वारा रचित ग्रंथ रामचरितमानस में दो स्थानों पर सपने का प्रसंग आया है, प्रथम ननिहाल में रहते भरत जी को और दूसरा लंका में स्थित अशोकबाटिका में सीता की रखवाली करती त्रिजटा को। पहला सपना परिस्थितिवश भरत को चिन्ता में डालने वाली, दूसरा सपना कल्पनालोक में भविष्य के गर्भ में ठोस परिणामों से अवगत कराती हुई।

उपरोक्त दोनों घटनाओं में सपनें की अहं भूमिका और सत्यता की परख है और ये कहीँ न कहीँ हमारे जीवन में घटित अहं योजनाओं के परिणामों की ओर इशारा भी करती है। सपने व्यर्थ नहीं होते यदि उसके इंगित रास्तों पर सार्थक पहल की जाय।

डाक्टर ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का कहना था कि सपने वे सार्थक नहीं होते, जो गहरी निद्रा में देखे जाते हैं। सपनें वही सच्चे होते हैं जो व्यक्ति को सोने न दे, सदैव बेचैन करे।

आज के नवयुवकों को अपने सपने साकार करने के लिए निम्न सूत्र याद रखना चाहिए ।

कामयाबी = सपने + आशावादी;

सफलता = जुनून + रिश्ते + लीडरशिप;

मेरी सामग्री = प्रयोग + सोच + खोज;

मेरी विधि = समर्पण + संतोष + लीडरशिप;

मंजिल = नजरिया + काम + नो शार्टकट;

मेरी जीत = अनुशासन + लक्ष्य;

सूत्र = सादगी।

ओमप्रकाश गुप्ता बैलाडिला

एक अहसास -एक पिता होने का

हम तो चाँद सितारे उस परिवार के,
जिसमें पिता एक आकाश होता है।
जिसके रोशनी से दमकता पूरा घर,
वह तो, पिता का ही प्रकाश होता है।

आसमान से ऊंची होती जगह कहीँ,
तो वह बस, पिता का स्थान होता है।
कंधों पे बैठा लेते, तब लगता मुझको,
इस सारे जगत का, अभिमान छोटा है।

दुलार पर कुछ कह सकते नहीं तुम्हें,
पर चुप्पी में छुपा, यार नजर आता है।
हमारी खुशी में लाखों गम भूल जाते,
मेरे तोतली पे दिलबाग नजर आता है।

जोश आ जाता है जग जीतने का,जब
मेरी हथेली तुम्हारी उँगली पकड लेती।
परिवारों का आदर्श बन जाते तभी तुम,
मेरी कामयाबी जब चार चाँद लगा लेती।

तुम नहीं, तो लगता इस घर की छत नहीं,
जरा सी हवा में ये तूफान नजर आता है।
आग के गोले से लगते बन्धु बान्धव मेरे
झरोखे से, ये शहर वीरान नजर आता है।

पत्नी की पीडा : एक शहीद सैनिक की

माँ को तुम मन ही मन यह दिलासा देते रहे,
कहकर, कि तेरे लहू का एक बूँद जिन्दा है।
समर्पित होकर, उस माटी को नमन करते रहे,
मत रो, तेरी गोद में मेरा एक लाल जिन्दा है।
मैं यहाँ पर एक टक पांवडे बिछाये बैठी रही,
इस अहसास के साथ कि मैं भी तेरे साथ हूँ।
भले ही सीमा पर तुम्हारे साथी साथ देते रहे,
पर अहसास वहाँ कराती रही, मैं हमसफर हूँ ।
देश की विकास गाथा, तेरा मन वहाँ गाता रहा,
पर तन ने आकर कहा, अब घर में तेरे साथ हूँ।
इस खून की तहसीर से तिरंगा अभी भी गर्म है,
गुनगुनाता रहा गीत कि मैं अब भी तेरे साथ हूँ।

ओमप्रकाश गुप्ता बैलाडिला

आदर्श चरित्र और जीवन मूल्यो की दरकार

आज देश में चरित्र का संकट है। पशुओं के लिए 'अभयारण्य' बनाये जा रहे हैं और मनुष्य के लिए 'भयारण्य'। कहाँ से कौन चोट पहुँचा रहा है, पता ही नहीँ चलता?

समाज आज भी समझता नहीँ है। प्रकाशक गण केवल लाभ, नेता गण अपने मलाईदार पद और शक्ति, औद्योगिक घराने के लोग ऊँचे से ऊँचे क्रेडिट रेटिंग और अधिक से अधिक लाभ की बात सोचते हैं और लेखकगण समृद्ध ज्ञान की जगह नोट्स, सैंपल पेपर्स और विद्यार्थियों को भ्रम में डालने वाला काम कर रहे हैं।

यह चुनौती का समय है। सारा देश आह्वान कर रहा है कि जीवन के मूल्य लौट आयें।

सचमुच आज हर तरफ एक घना अंधेरा छाया हुआ है और इस अंधकार के अगणित कारण हैं। इन्हें एक दूसरे से अलग कर पाना बहुत कठिन...

घायल धरा

आकाश निशब्द है,
मैं भी निस्तब्ध हूँ,
धरा क्यूँ प्रबल सशब्द है?
इस मकडजाल में आबद्ध है,
सूर्य तो निरब्द है,
एक ये धरा छोड,
सबके जुड़े प्रारब्ध है।
शान्त मन को लिए,
अबाध गति को लिए,
पर नियति है अशब्द,
तारे सारे आकाश के
नीरवता पर कर रहे बहस।
नीहारिका निहारती रही,
अतीत की रचना समझ।
धूमकेतु थिरक रहे, तेरी
अभिराम रचना निरख,
पर धरा! तू घायल हो रही,
जो शब्दों ने शब्दवाण को,
चला दिये क्षितिज तलक।
शब्द ने शब्दों के अर्थ में,

लगा दिए सारे कुतर्क।
पैदा हो रक्तबीज सा,
फैला दिया मायाजाल सा,
संघर्ष को छेड दिया,
बनकर नेवले साँप सा।
छीन रहे निवाला, निःशक्त का,
शिवालय खडा कर रहे,
बनकर दीवार सशक्त का।

---000---

जहाँ चाह, वहाँ राह

इस कहावत में दो भाग है, प्रथम जहाँ चाह। "चाह" शब्द मुख्य है। यहां चाह वो नहीं,जो मुगेंरी लाल के "हसीन सपनें "या शेख चिल्ली के "दिवा स्वप्न" जैसा दिखाई दे। इस चाह के साथ जुडी है; कार्य की लयबद्धता, समर्पण, जिम्मेदारी, जिजीविषा, दूरदर्शिता, परिश्रम, प्रतिबद्धता, दूरदर्शिता तथा उचित समय प्रबंधन। कार्य को करते समय जब किसी व्यक्ति की सोच में ये बातें बैठी रहती है,तो सफलता की राह स्वयं ही पलक पाँवडे बिछाये तैयार रहती है। जब किसी में यह जज्बा आ जाता है तो न खाना पीना अच्छा लगता है और न ही नींद। सोते, जागते, उठते, बैठते, हँसते, रोते, खेलते या अन्य मनोरंजन करते ध्यान सदैव अपने उद्देश्य पर रहता है।दूसरे शब्दों में वह कार्य करने के प्रवाह में हँस लेता है, मनोरंजन कर लेता है और सो लेता है इत्यादि। उसका मन मस्तिष्क भौतिक वस्तुओं या बातों से स्वतः ही हट जाता है। विश्व में अनेक मनीषियों के जीते जागते उदाहरण हैं, हिन्दी साहित्य में कबीर, सूर, तुलसी, जयशंकर प्रसाद, मुंशी प्रेमचंद, अंग्रेजी में शेक्सपियर, मिल्टन, वर्डसवर्थ, दर्शन में अरस्तू, महात्मा गाँधी, डा0राधाकृष्णन, विज्ञान में न्यूटन, गैलीलियो, आइंस्टाइन, सी वी रमन, ए0पी0जे0अब्दुल कलाम और एस0रामानुजम आदि। इनके सम्पूर्ण जीवन की सोच, शैली और दर्शन का अध्ययन

करने से अहसास होगा कि मनुष्य रूप में ऐसे भी व्यक्ति हो सकते है। इन्होंने केवल जिया ही नहीं बल्कि पूरे विश्व का नक्शा ही अपनी सोच और दर्शन से बदल दिया, ऐसे लोगों ने पूरे संसार की फिजा ही बदल दी। सच में इन्होंने अपने चाह से अपने तरीके से निरन्तर गति करती दुनियां की राह ही बदल दी। हम सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि ऐसे जज्बाती महात्माओं की आत्मा निरंतर हमारा मार्गदर्शन करती रहे।

आहवान:हिन्दी दिवस के अवसर पर

भाषा से जुडी भावना है, भावों से चिंतन, करना है,
चिंतन से देश को वाणी दे, विघटन से इसे बचाना है।
दिल की भाषा, बनकर ही हिंदी जीवित रह सकती है,
जन के कंठों में, दे सुवास,जन भाषा,इसे बनाना है।

कल कल निनादिनी सरिताएं, ज्यों मिलती सागर में,
सारी अंचल भाषायें हिंदी में घुल, शाश्वत हो जाना है।
भारत माता के अर्चन में, फिर राम रहीम मिल जाएँ ,
सूफी संतों की वाणी से, फिर हिन्दी को महकाना है।

"डोवरबीच" की अंग्रेजी हमें जकड गुलामी हर्षाती है,
'अंग्रेजी' मृगतृष्णा भ्रम है, अपने को नहीं भटकाना है।
सिन्धु की बेटी, हिन्दी है, सरल और भोली भाली है।
कावेरी!अब तुम उदार बन, कुल बहू बनाअपनाना है।

हिन्दी भाषा में, हमारी माँ का निर्मल प्यार सरसता है।
हमें "पूप-सी" से अंग्रेजी, बच्चों को नहीं पिलाना है।
रसखान सवैये, सूर के गीतों से वर्ग भेद खाई पटती है,
कबीर की निभा भूमिका, आडम्बर को दूर भगाना है।

(नोट: "डोवरबीच" इंग्लैंड में एक स्थान है, जहाँ रह अंग्रेज कवि "जॉन मिल्टन, विलियम वर्ड्सवर्थ आदि" ने विश्व प्रसिद्ध कविताएँ लिखी हैं।)

ओमप्रकाश गुप्ता बैलाडिला

मुझे क्यूँ शक है

अरे इस शहर में,
किसके सगे बनें या बनायें,
किससे यह अपना सपना सजायें,
अब तो इस विश्वास में ही विश्वासघात।
जिसको अंतरतम समझो, करता वही भितरघात,
खून के रिश्ते में दोगलापन आ गया है,
इस भीड में खालीपन आ गया है,
यहाँ चुभन है अब हर फूल में,
नोक नहीं शूल में।

बेशक इस दिन का,
सूरज से युगों से रिश्ता रहा हो,
तंग गलियों में पसरे अँधियारे पर,
मेहरबां कयूँ है, मुझे शक है इस बात पर।
महकाया जाता है, किसी अमावस के आने पर,
क्यूँ रातरानी को, बस रजनी के गजरे पर,
समझ से परे है, दिन में छिपने वाले,
क्यूँ उल्लू सीधे शक्ल वाले,
रात में डरावने दिखते है।

ओमप्रकाश गुप्ता बैलाडिला

नैसर्गिक सुन्दरता होती निर्मल की

एक,
मयूरी ने,
अपने मयूर से,
अपने भींगे होठ को,
उसके अधर पर रखकर,
बुदबदाई, अपने नेत्र बंदकर,
न जाने कयूँ, यह गदराये बादल,
तुम्हारा नृत्य देखने हो जाते पागल,
फिर और जोर से गरजने लगते,
ऐसे में तुम पागल क्यूँ होते,
ऐसे नाच मगन हो करते,
साथ में सारे झूम उठते,
हवाओं संग लताएँ,
बदले ये फिजाएँ,
अब मैं शिकवा,
करती हूँ तुमसे,
यह सभी मुझसे,
ज्यादा खूबसूरत हैं,
दिल्लगी में मयूर बोला,
तन से सुन्दर रचना होती,

निर्मल मन, त्याग समर्पण की,
बादल सागर से नीर भर लाता है,
रव से विहवल हो, बूँदो में बरसाता है,
प्यार से ऐसे सिहरा देता हमारा तन,
प्रफुल्लित कर जाता है मेरा मन,
मयूरी बोली, सब छोड नाचूँगी,
पिय संग खुश हो गाऊँगी,
ये वजूद तुम्हारे बिना,
नदी हो पानी बिना,
आखिर तन दो,
हमारे प्राण,
एक।

ओमप्रकाश गुप्ता बैलाडिला

नाम - ओमप्रकाश गुप्ता (अवकाश प्राप्त प्रवक्ता, गणित)

जन्मतिथि - पन्द्रह जनवरी सन उन्नीस सौ पचपन

शिक्षा - एम०एस०सी०(गणित), एम०ए० (अर्थ०, समाजशास्त्र), बी०एड०

पता - बी०आई०ओ०पी०सी०सेकेंडरी स्कूल, किरंदुल,जिला- दन्तेवाड़ा, छत्तीसगढ़

मोबाइल - ९४२४२७८४२७

ईमेल - opgupta.kdl@gmail.com

प्रकाशन - जी०बी०पन्त यूनिवर्सिटी, उत्तराखंड (२००७) मणिपुर विश्वविद्यालय, इम्फाल (२००८) दिल्ली विश्वविद्यालय, साउथ कैंपस (२०१०) एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली, (२०१२) में गणित के विभिन्न प्रमेयों, संकल्पनाओं पर शोधपत्रों का प्रस्तुतिकरण और प्रकाशन।

एन०सी०ई०आर०टी०,नई दिल्ली के त्रैमासिक पत्रिका (स्कूल सांइस, मार्च २००३) में 'औरिगैमी से गणित शिक्षण' लेख का प्रकाशन, आकाशवाणी जगदलपुर के विभिन्न आयोजनों में कवि गोष्ठी, कविता पाठ, छात्रीय कार्यक्रम (विज्ञान,गणित), परियोजना के राजभाषा पत्रिकाओं में विभिन्न लेखों और कविताओं का प्रकाशन इत्यादि।

सम्मान - परियोजना के अनु०जाति, जन जाति एसोसिएशन द्वारा २०११ में अंबेदकर जयंती पर 'शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान' पर शील्ड और सम्मान पट्टिका प्रदत्त ।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का.. आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का...

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.– 9424765259, ईमेल– antrashabdshakti@gmail.com

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-5372-254-8

मूल्य 250/–